

द्रव्य महायक—

श्रीमती सीतावना बहन जन धार गार्ह कच्छ भुम बाणे

घतमान कसकता ३००)

ॐ

श्री दलीब-दमी रविच-दमी बंद जन पनीदी बाणे

घतमान कसकता ३००)

ॐ नम ॐ

श्रीमत्सुखसागरादि सद्गुरु विजयते तस्मात्

आत्म विज्ञान प्रकाश

卐

छरतरगच्छ नमोमणि, पूज्य, स्वर्गोपगणाधीन विद्वद्वय श्रीमान्
सुखसागरजा म० सा० के वतमान पट्टधर प० प्रवर
शांतिमूर्ति गणनापक हेमेट्रसागरजी म० सा० के
आज्ञानुयायिनी पू० गु० प्र० स्व० श्री लक्ष्मी श्रीजी
म०सा० की स्व० नि०वि० नि०य श्रीजी म०सा०
की नि०स्व० वि० श्री विमल श्रीजी म० की
आज्ञानुयायिनी वतमान प्रवर्तिनी बा० ध०
वि० प्रमोद श्रीजी म० सा०

ॐ सदुपदगात् ॐ

卐

प्रकाशक

विमल प्रमोद ज्ञान मन्दिर फलौदी

वि० स० २०२८

वीर स २४६७

मूल्यामूत्य

प्रथम वृत्ति

१०००

ॐ अग्निह मन्त्राया ॐ

पूज्य स्व० ज्यन्त श्रीजी महाराज माहव



जन—सम्बत् १९३६ पाप कृष्णा ६
दीक्षा—सम्बत् १९६४ माघ गुवला ८
स्वर्ग—सम्बत् २००७ वशाख गुवला ८

प्रातः स्मरणीया परम पूज्या श्री जयवत श्रीजी महाराज साहेव का सच्चिद जीवन चरित्र

राजस्थानान्तर्गत फलोदी निवासी सेठ श्री कूलचन्दजी साहब द की सतान मे एक पुत्री और तीन पुत्र थे । वि० स० १९३६ पौष ० नवमी को सब प्रथम पुत्री का जन्म होने से श्रेष्ठता व ज्येष्ठता नाते कया का नाम जेठी बाई रखा गया और पुत्रो के नाम गणकलालजी मिसरीलालजी अमरचन्दजी रखा, श्री जेठी बाई मे अपने योग्य माता पिता के सुसंस्कार परिलक्षित होते थे । बाल्यकाल से धर्म ध्यान के प्रति अभिरुचि अत्यंत सराहनीय थी । उत्तम वातावरण मे पली पुसी सतान मे ही धार्मिक संस्कार पनपा करते है ।

श्री जेठी बाई जब तेरह बप की थी तब ही आपका विवाह कर दिया गया । आपके पति श्री सूरजमलजी गोलेछा पडलम माला के नाम से जाने पहिचाने व्यक्ति थे । विवाह के २ बप श्चात् आपको एक पुत्री रत्न की प्राप्ति हुई । जिस समाज मे श्री के जन्म से कोई खुशिया नही मनाई जाती फिर भी आपने पुत्रो का जन्मोत्सव पुत्र जन्म से ही शानदार मनाया । क्या पुत्र और पुत्री मे अंतर मानना मानवोचित है ? क्या पुत्रियो की गवश्यकता नही है ? समाज को योग्य बन्धुओ की, माताओ की, गृहणियो की, साध्विया की आवश्यकता है तो पुत्रियो के जन्म पर हृष मनाना ही होगा ? सेठ सूरजमलजी और जेठी बाई ने अपनी पुत्री का गुणानुसारी नाम 'रत्न' मीठुमारी रखा ।

लक्ष्मी-लक्ष्मी हो आई

द्रव्य लक्ष्मी और भाव लक्ष्मी देने वाली क्या सचमुच लक्ष्मी का अवतार थी। पुराना दिया हुआ भ्रूण घर बंटे होने लगा, अतः द्रव्य लक्ष्मी लौट आई। जब लक्ष्मी ११ महीने ही हुई होगी तब अचानक सेठ श्री सूरजमलजी का स्वर्गवास हो पृथ्वी का पिता का वियोग होने का भी क्या पता, क्याकि उम्र लघु बालिका ही थी। वियोग की वेदना ने जेठी वार्ड को किया। नू कि बाल्यवस्था में बधव्य के महान दुःख को वाली अबलाया के अविरल आसुआ में इन दुःख के दिखते हैं।

आवश्यक सहारा

ऐसी विपदावस्था में जिन्हें योग्य व्यक्ति और समाज और धर्म का अपेक्षित सहारा न मिले तो पच भ्रष्ट हो सकते हैं। परन्तु समयता जेठी वार्ड ने धर्म्य धारण किया धर्मशाला में चिराजिन परम पूज्या गीताथ गुरुवर्या श्री लक्ष्मी श्री जी म० सा० के चरण कमलों की सेवा में उपस्थित हुई। पू गुरुवर्या ने धर्मोपदेश द्वारा जेठी वार्ड के अतमन को वियोग हटाकर त्याग वराग्य की ओर उन्मुख कर दिया। यही तो था कि इस अवस्था में क्या आवश्यक है ?

शिक्षा का श्री गणेश

श्री गुरुवर्या की सेवा में अपने आपको उपकृत मानती हुई जेठी वार्ड ने पच प्रतिक्रमण, स्तवन, सत्काम्य आदि का अच्छा

भ्यास कर लिया। समय का सदुपयोग शिक्षण से और प्राप्त
य का सदुपयोग चतुर्विध सघ की सेवा भक्ति से उदारता
व करने लगी।

तीर्थ यात्रा प्रवास

अपनी गुरु बर्ष्या के साथ पालीताणा में चौमासा किया और
यात्रा की और उस पुण्य भूमि में साधु साध्विया को प्रतिला-
त करने में अपने द्रव्य का उत्तम सदुपयोग किया। अपनी पुत्री
श्री को साथ लेकर दिपावली पर पावापुरी कलकत्ता कार्तिक
शिमा महोत्सव समेत शिखर यात्रा की। राजग्रह, अयोध्या, भाग-
पुर कुंडलपुर, चम्पापुरी, वैशाली, क्षत्रियकुंड, गुणियाजी, काशी
नारस आदि यात्राएँ की। गुजरात में अहमदाबाद तथा मेरीसा
पयणीजी की, आबू, अचलगढ महुआ, डाटा तलाजा कदमगिरी
नागढ, गिरनार, भावनगर, मारवाड में नाकोडा, कापरडा
सालमेर, जालोर, आहार, सिरोही आदि यात्राएँ करके अपने
सकल धन बनाया।

मैं तो दीना लूंगी

जेठी दाई ने अपनी पुत्री नक्षत्री कुमारी में नहा 'बेटी मैं
इस असार ससार से विरक्त होकर चारित्र्य रत्न स्वीकारूंगी' बोल
केरी गया इच्छा है। यह सुनते ही पुत्री ने एक ही उत्तर दिया आप
दीक्षा लेवेंगी तो मैं भी दीक्षा लेउंगी। माँ का हृदय हर्ष से
नाचने लगा, मोचा सतान हो तो ऐसी ही हो, जो समय द्वारा
अपना और विश्व का कल्याण मांग प्रशस्त करे।

दीक्षा महोत्सव

आपके पूज्य जेठ सेठ श्री सौभाग्यमलजी गानेच्छा से दीक्षा आज्ञा संपादन कर फलोदी म विराजित पूज्य श्री गणाधीश द्यगनसागरजी म० सा० के सानिध्य मे वि० स० १९६४ म सुदि ५ को धूमधाम से दीक्षा ली । दीक्षात्सव के समय उपाजित द्रव्य का सदुपयोग कर लाभ लिया ।

दीक्षान्तर का नाम

दीक्षा के पश्चात आपका नाम जयवत श्री जी म० सा० र और परम पूज्या श्री लक्ष्मी श्री जी म० सा० की शिष्या बनाई । आपकी पुत्री लक्ष्मी कुमारी का दीक्षांतर नाम श्री प्रमोद श्री म० सा० रखकर परम पूज्या श्री शिव श्री जी म० सा० की शिष्य उद्घोषित की गई ।

सेवा और चातुर्मास

आप अपनी पूज्या गुरुवर्या की विनय वैयावच्च सेवा सुश्रुति मे तल्लीन रहती और आप के इंगित और आकारा के अनुसंधान करती हुई पान ध्यान तप जप म लीन रहने लगी दो चातुर्मास पूज्या लक्ष्मी श्रीजी म०सा० की सेवा मे किये, और एक चौमासा म० सा० श्री प्र म श्री जी म० सा० श्री नान श्री म० सा की सेवा मे, एक चौमासा अरनोद मे पू० श्री देव श्री जी म० सा की सेवा मे किया । तत्पश्चात आप अपने महदुपकारिणी पूज्य श्री विमल श्री जी म० सा० की सेवा मे रहती हुई बाल वृद्ध ग्लान तपस्वी आदि साव्वी समुदाय की मन वचन वाया से सेवा सुश्रुति के महान् लाभ प्राप्त कर धर्य हुई ।

विजिष्ट तपस्यायें

एक मास क्षमण, पच्चीस, एक इक्कीस, अठारह, सोलह पंद्रह, ग्यारह, दम और चत्तारो अठ दम दाप, बढिया, बीस स्थानक की बडी तपस्याओ के अलावा जीवन को तप पूत बना रखा था । तपस्या ही वह साधन है जिससे पूर्वोपाजित कर्मों के बधन को तोडा जाता है ।

श्रद्धा के चत्मकार

पाली चातुर्मास के समय आप गौचरी के लिये पधार रही थी । सडक पर कृष्ण और भीम काय सप आपने पैरो मे लिपट गया । जिस मर्प को दूर से देखने से अथवा जिसकी चर्चा के श्रवण मात्र से अन्तर भयभीत होता है । उसे अपने पैरों लिपटा देखकर श्री जयवत श्री जी म० सा० वही स्थिर बडे रहे और मन ही मन में महा मन नवकुंज का स्मरण और दादा गुन्देन श्री जिनदत्तसूरी कुशल श्री जी नाम स्मरण से ही वह सप परो से खुलकर गतव्य स्थान पर चला गया " बाद मे गिरगया ।

एक बार राजगढ (मालवा) मे आपने गौचरी के लिये किसी बडी पोल मे प्रवेश किया । दरवाजे का ऊपरी विसाल हिस्सा मानो आपके ऊपर पडने को था, इतने ही में आपने अपना सिफ एक हाथ ऊचा किया और वह ठहर गया । जब आप उस दरवाजे से शांति से बहार निकले चुके वि पाल सहित दरवाजा बडे घडाके की आवाज करता गिरगया । दशक लोगो की भीड ने आपकी महिमा और शील समय एव सत्य का प्रभाव समझा ।

वेदनीयोदय मे समता

वि० स० १९६० माघ वदी ८ की फनोदी मे पूज्या विमल श्री जी० म० सा० का स्वगवास हो गया । तत्पश्चात् आपने मारवाड मेवाड, मालवा, वच्छ, गुजरात, सौराष्ट्र आदि प्रदेशो मे चौमासे करके जैन शासन की महती प्रभावना की । धमध्यान और तपस्या का साधन औदारिक शरीर जोलाशोण हा ही जाता है । इमने जो कृच्छ गुभ काम लना हा वह ले लेना हो अच्छा है । पूव वेदनी के उदय से स्वय श्री जयवत श्री जी म० सा० गूय वायु की बीमारी से भिड गये । तीत्र वेदना काल म भी आप आवश्यक क्रियाग्रा के प्रति अत्यन्त ही सावधान थी, आपकी आठ वष की लम्बी बीमारी के समय राजेन्द्रश्री प्रकाश श्रीजी ने श्रद्धापूर्वक अपनी सेवायें समर्पित की । श्री प्रकाश श्रीजी ने तो पूज्या श्री जयवन्त श्री जा म०सा० की सेवा के लिये तन मन वचन को लेकर रात दिन एक कर दिया ।

वृद्धावस्था मे यदि सेवा सुश्रुता करने वाले धम सहायक साथियो का सहयोग न मिने तो चित्त समाधि टूट्ठा भ्रमभव है । अत इन सेवा सुश्रुता करने वाली साथियो के ससग से आप शांति पूर्वक, पच परमेष्ठि का जाप करतो रहती थी ।

पूज्या की कृपा से

११

मैने जो आगम व्याकरण 'याय, छद काय काय अलकार के अध्ययन अतिरिक्त प्रावृत्त मागधी भाषा म प्रवेश पाया वह आपकी छत्र छाया का ही प्रताप है । जब तत्र इम आत्मा म ज्ञान की ज्याति है तब तक उन महान् शक्तियों की विस्मृति हा ही नहीं सकती ।

उन पूज्येश्वरीजी की स्मृतिमात्र शेष है

वि० स० २०२७ बंसाख सुदी आठम की समाधि पूर्वक स्वर्ग पधार गई । जगत को जगाने के लिये और अपने आपको पवित्र उच्च मममित आत्मा को बनाने के लिए आपने जो उत्तम मार्ग अपनाया वह प्राणिमात्र के लिये अनुकरणीय और स्मरणीय है । आज आप शरीर से हमारे बीच विद्यमान नहीं हैं । परन्तु आपकी अमृत्यु शिक्षायें अमर हैं और रहेगो ।

मैं आपके चरणा में शतश एव कोटिश कोटिश वन्दन करती हुई श्रद्धाजलि अर्पित करके अपने आपको वृत्तार्थ मानती हूँ, और आप के कर कमलो में यह पुस्तक आत्म विज्ञान प्रकाशक समर्पण करती हूँ ॥ कृपया स्वीकारें ॥

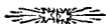
आपकी स्मृति में अठ्ठाई महोत्सव प्रभावना सहित तीन वरक्षेत्रों और श्री पुरुषो का रात्री जागरण तथा जीव दया में प्रचुर द्रव्य और बृहत्शान्ति स्नानादि धर्म काय बहुत प्रशशनीय हुए थे ।

ॐ शुभम् भूयात् ॐ
आपकी विनीता धात्राकारिणी
राजेन्द्रा श्री

आत्म विज्ञान प्रकाश

स्वर्गीय परमपूज्या श्री जयवन्त श्रीजी स्मरणार्थ

अथ त्रोगणत्रीस द्वार लिख्यते



❀ मंगला चरण ❀

॥ आत्म-श्लोक ॥

जिनेन्द्र पूजा, गुरु पधुपास्ति ।
सत्नानुरुम्पा शुभ पात्र घन ॥
गुणानुराग श्रुति राग मस्य ।
नृ जन्म वृत्तस्य फलान्य मूनि ॥ १ ॥

प्रथम नामद्वार । बीजू लेश्या द्वार । त्रीजूशर
द्वार । चौथु अगगाहना द्वार । पाचमु सधयण द्वार ।
छद्दु सजा द्वार । मातमु सस्थान द्वार । आठमु कपाय
द्वार । नयमु इन्द्रिय द्वार । दममु समुद्घात द्वार । अग्रारमु
दृष्टी द्वार । वारमु दर्शन द्वार । तेरमु ज्ञान द्वार । चउठमु
योग द्वार । पनरमु उपयोग द्वार । सोलमु उपनयानी

मर्यानु द्वार । सत्तरमु चवमानु द्वार । अठारमु आउ-
 खानु द्वार । उगणीसमु पर्याप्ति द्वार । बीसमु आहार
 द्वार । एकपौममु गतागति द्वार । बावीसमु वेद द्वार ।
 त्रेवीममु भुवन द्वार । चौपाममु प्राण द्वार । पचवीममु
 पदा द्वार । छनीसमु धर्म द्वार । मतावीममु जीव जोनी
 द्वार । अठावीममु कुल कोटी द्वार । आंगणपौसमु अल्प
 बहुत्र द्वार ॥

॥ हवे प्रथम नाम द्वार कहे छे ॥

प्रथम द्वार ॥ १ हवे साते नरने यह एक दडरु ।
 ते नररुना नाम । घमा १ वसा २ शैला ३ अचणा ४
 रिटा ५ मघा ६ माघपती ७ ॥

॥ हवे भुवनपतिना दस दडरुना नाम ॥

अमुर कुमार २ नाग कुमार ३ सुपर्ण कुमार ४ विद्योत
 कुमार ५ अग्नि कुमार ६ द्वीप कुमार ७ उदधि कुमार ८
 दिशी कुमार ९ वायु कुमार १० स्नानित कुमार ११ पाच
 दडरु थापरना ॥ प्रग्नी १२ पानी १३ अग्नि १४ वायु
 १५ वनस्पती १६ वैत्री १७ तेंद्री १८ चौरिंद्री १९
 त्रियंचपचेंद्री २० मनुष्य २१ व्यतर २२ यौतिथो २३
 वैमागिरु २४

॥ हवे वीज लेश्या द्वार कहे छे ॥

लेश्या ६ ना नाम । कृष्णलेश्या १ नीललेश्या २ कापोतलेश्या ३ तेजोलेश्या ४ पद्मलेश्या ५ शुक्ललेश्या ६ नारकी, तेउ, वाउ, बंद्री, तेंद्री, चौरिंद्री । ए ६ दडके प्रथम ३ लेश्या । तिर्यचपचेन्द्रियने । मनुष्य ने ६ लेश्या । १० भुवनपति व्यतर, पृथ्वी, पानी, अनस्पती । ए चार दडके । प्रथम ४ लेश्या । यौतिपी । तत्रा सौधर्म ईगान देवलोक्रे । एरु तेजो लेश्या । त्रिजे चोधे पाचमे दव लोक्रे । पद्म लेश्या । छट्टा देव लोक्रे यी ऊपरान्त सघले शुक्र लेश्या ॥ २ ॥

॥ हवे त्रिजु शरीर द्वार ॥

शरीर ५ ना नाम कहे छे । श्रौदारीक शरीर १ वैक्रीय शरीर २ आहारक शरीर ३ तेजस शरीर ४ कार्मण शरीर ५ नारकी । दश भुवनपति व्यतर यौतिपी । वैमाणिक । ए चउ दडके त्रय शरीर । वैक्रीय तेजस कार्मण, पृथ्वी, पानी, अग्नि, अनस्पती, तेंद्री, चउरिंद्री । ए मात दडके त्रय शरीर । श्रौदारीक, तेजस कार्मण । मायु काय, तिर्यच-पचेद्री, ए रे दडके । आहारक पिना-चार शरीर । मनुष्यने पाच शरीर ॥ ३ ॥

॥ चोथु अरुगाहना द्वार वहे ते ॥

हवे ममुच्चे नारकीनी । अरुगाहना । जघन्य, आगु-
लनो अमरयातमो भाग । उत्कृष्टी पाचसे धनुपनी । प्रथम
नरके, जघन्य तीन हाथ, उत्कृष्टी पुणा आठ धनुपने ६
आगुल । बीजी नरके जघन्य पुणा आठ धनुपने ६
आगुल उत्कृष्टी साढा पन्धर धनुपने वारा आगुल ।
त्रीजी नरके जघन्य साढा पन्धर धनुपने वारा आगुल ।
उत्कृष्टी सवा एकत्रीस धनुपनी । चौथी नरके जघन्य
सवा एकवीस धनुप । उत्कृष्टी साढी बासठ धनुप ।
पाचमी नरके । जघन्य साढी वामठ धनुपनी । उत्कृष्टी
सवासो धनुपनी । छट्टी नरके । जघन्य सवामौ धनुपनी
उत्कृष्टी अढीसे धनुप । सातमी नरके जघन्य अढीसे धनुप ।
उत्कृष्टी पाचसे धनुपनी । दश भुवनपती व्यतर । योतीपी ।
ए वारा दडके जघन्य आगुलनो असख्यातमो भाग ।
उत्कृष्टी सात हाथनी । वैमाणिक जघन्य आगुल नो
अमरयातमो भाग । उत्कृष्टी पहिले बीजे देव लोके । सात
हाथनी । त्रीजे चौथे देवलोकें ६ हाथनी । पाचमे छठे देव
लोके पाच हाथनी । सातमे आठमे देवलोकें चार हाथनी ।
नवमे दशमे अग्यारमे वारमे देवलोकें । तीन हाथनी देही ।
नवग्रवेयके वै हाथनी देही । पाच अनुत्तर निमाने । एक

हाथनी देही । ए तेर दडके देवता । उत्तर वैक्रीय करे तो
 लाख जोजननी देही । पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु ए चार
 दडके जघन्य । तथा उत्कृष्टी अग्गाहना । आगुलनो अम-
 ख्यातमो भाग । प्रत्येक वनस्पती कायनी । अग्गाहना जघ-
 न्य आगुलनो असख्यातमो भाग । उत्कृष्टी अग्गाहना हजार
 योजन से काइक अधिक । बेंद्रीनी बारा योजननी । तेंद्रीनी
 तीन कोसनी । चउरिंद्रीनी चार कोसनी । तिर्यंच पचेंद्रीनी
 हजार योजननी । उत्तर वैक्रीय करेतो नमो योजन ।
 मनुष्य पचेंद्रीनी तीन गाउनी । उत्तर वैक्रीयकरेतो लाख
 योजननी देही ॥ ४ ॥

॥ पाचमो सधयण डार कहे छे ॥

ते सधयणना ६ नाम । बज्जरीपभनाराच सधयण ।
 १ रीपभनाराच सधयण । २ नाराच सधयण । ३ अर्धना
 राचमधयण । ४ कीलकी सधयण । ५ छेत्रठु सधयण । ६
 नारकी, दस भुवनपति । व्यतर, योतीपी, वैमाखिक, पाच
 थावर । ए आगणीश दडके । असधयण, बेंद्री, तेंद्री,
 चउरिंद्री, व्रणदडके, एक छेत्रठु सधयण । मनुष्य पचेंद्री ।
 तिर्यंच पचेंद्री ने ६ सधयण ॥ ५ ॥

३, चक्षुद्रो ४, श्रोत्रोद्रो ५ । नारकी दम भुवनपति, व्यतर, योतीपी, वैमाणिक, तिर्यचपचेंद्री, मनुष्यपचेंद्री, एमोल दडके पाच इद्रो । पाच वावरने । एक फरसद्रो, चेंद्रीयने, फरसेद्रो रसेद्रो, तेंद्रोने, फरसेद्रो, रसेद्रो घ्राणेंद्रो, ए तीन होय । चौउरिद्रो ने । फरसेद्रो, रसेद्रो, घ्राणेंद्रो, चक्षुद्रो, ४ इद्रो होय ॥ ६ ॥

॥ दसमु समुद्रघात डार कहे छे ॥

समुद्रघात भातनानाम । वेदनीय समुद्रघात १, कषाय समुद्रघात २, मरणातिक समुद्रघात ३, वैक्रीय समुद्रघात ४, तेजस समुद्रघात ५, आहारक समुद्रघात ६, केवली समुद्रघात ७ ॥ नारकीने ॥ वायुने चार समुद्रघात । वेदनी १, कषाय २, मरणातिक ३, वैक्रीय ४, ए चार होय । दमभुवनपति । व्यतर, योतीपी, वैमाणिक, तिर्यच पचेंदी । ए चउ दडके पाच समुद्रघात । वेदनी १, कषाय २, मरणातिक ३, वैक्रीय ४, तेजस ५, पृथ्वी, पाणी, अग्नी, वनस्पती, त्रय विकलेन्द्रो । ये सात दडके । त्रय समुद्रघात । वेदनी १ कषाय २ मरणातिक ३ । मनुष्यने सात समुद्रघात होय छे ॥ १० ॥

॥ इग्यारमु दृष्टी द्वार कहे छे ॥

दृष्टी ३ ना नाम । समस्त दृष्टी १, मिश्रदृष्टी २, मिथ्यादृष्टी ३ ॥ नारकी ॥ दश भुवनपति, व्यतर, योतीपी, वैमाणिक, तिर्यंच पंचेन्द्री । मनुष्य ए सोला दडके । त्रण्यदृष्टी । पाच थावरने । एक मिथ्यादृष्टी । त्रण्य रिक्ले द्रीने । समस्त । मिथ्यात ए ने दृष्टी ॥ ११ ॥

॥ वारमु दर्शन द्वार कहे छे ॥

दर्शन ४ ना नाम कहे छे । चक्षु दर्शन १, अक्षु दर्शन २, अग्रधि दर्शन ३, केवल दर्शन ४ ॥ नारकी । दस भुवनपति । व्यन्तर, योतिपी, वैमाणिक । तिर्यंच पंचेन्द्रि । ए पन्नर दडके । त्रण्य दर्शन । चक्षु १ अक्षु २ अग्रधि दर्शन ३ पाच थावर । वेद्री ने तद्री । एक अक्षु दर्शन । चारेन्द्रि ने । चक्षुने अक्षु वेदर्शन । मनुष्य ने चार दर्शन ॥ १२ ॥

॥ तेरमो ज्ञान द्वार कहे छे ॥

पाच ज्ञान, तीन अज्ञानना नाम कहेछे । मतिवान १ श्रुतज्ञान २ अग्रधिज्ञान ३ मनपर्यवज्ञान ४ केवलज्ञान ५ मतिअज्ञान ६ श्रुत अज्ञान ७ विभग अज्ञान ८ । नारकी

दस भुवनपति । व्यन्तर । योतिपी । वैमाणिक । तिर्यंच
 पचेद्रि । ए पन्नर दडके । तणजान । तण अज्ञान । ए ६
 पामे । पाच थावरने मति अज्ञान । श्रुतअज्ञान ए रे पामे,
 तण त्रिस्लेन्द्रिने । रे ज्ञान । तथा रे अज्ञान ए चार पामे
 मनुष्यने पाच ज्ञान । तीन अज्ञान ॥ १३ ॥

॥ चवदमोयोग द्वार कहे ते ॥

हवे योग पन्नरना नाम कहेछे । मनना ४ योग । सत्य-
 मनयोग १ असत्य मनयोग २ सत्यमृषामनयोग ३ असत्य
 मृषा मनयोग ४ । वचनना चार योग रुहे छे । सत्य
 वचनयोग, अमत्य वचन योग, सत्य मृषा वचनयोग ।
 अमत्य मृषा वचन योग कायाना, सात योग, वैक्रिय काया
 योग, वैक्रिय मिश्र काया योग० । औदारिक काया योग,
 औदारिक मिश्र काया योग, आहारक काया योग,
 आहारक मिश्र काया योग, कर्मण काया, नारकी, दम
 भुवनपति व्यतर, योतिपी, वैमाणिक, ए चउद दडके ग्यार
 योग होय ॥ मनना चार वचनना चार, कायाना तीन ।
 वैक्रिय कायायोग, वैक्रिय मिश्र काया योग, कर्मण काया
 योग ॥ पृथ्वी, पाणी, अग्नी, वनस्पति ने तीन योग ।
 औदारिक, औदारिकमिश्रकाया योग, कर्मणकायायोग, वायु
 ने पाचयोग, औदारिकमिश्र वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, कर्मण,

त्रिजलेंद्रीय ने चार योग । औदारिक, औदारिक मिश्र, कर्मण ये तीन योग तथा असत्यमृषावचनयोग ये चार योग होय ॥ तिर्यंच पंचेदी ने तेर योग होय, मनना चार, वचनना चार, कायाना पांर औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, कर्मण, मनुष्य ने पन्धर योग होय ॥

॥ पन्धरमु उपयोगद्वार कहे छे ॥

उपयोग वारना नाम । पाच ज्ञान, मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अधिज्ञान, मनपर्यवज्ञान, वैवलज्ञान । तीन अज्ञान । मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, विमग अज्ञान । अने चार दर्शन । चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन, अधि दर्शन, कैवल दर्शन ॥ चार उपयोग छे । नारकी दस भुवनपति, व्यन्तर योतिपी, वैमाणिक, तिर्यंच पंचेदी ए पन्धर दडके नव उपयोग । तीन ज्ञान, तीन अज्ञान, तीन दर्शन ए नव उपयोग होय । पाच वार ने तीन उपयोग । मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, अचक्षु दर्शन होय । वैद्री, तेंद्री ने तीन तथा पाच उपयोग होय । वै ज्ञान, वै अज्ञान, एक अचक्षु दर्शन चौरिन्द्रिय ने छे उपयोग । वै ज्ञान, वै अज्ञान, वै दर्शन मनुष्य ने चार उपयोग पामे ॥

सोलहमु सत्तरमु उपजवा चंववानी संख्यानु द्वार

नारकी दस भुवनपति व्यतर, योतिपी, वैमाणिक, तिर्यंच पचद्रि, त्रय्य निकलेंद्री ए अठारा दडकं एक ममय जीव एक, बे, तीन आदि लेई मख्याता तथा अमरयाता उपजे, ने सरयाता असख्याता चये, । पाच आवर । एक ममय जीव असरयाता चये, असरयाता उपजे । साधारण एक समय मे अनता उपजे ने अनता चये । एक समय मनुष्यना जीव एक, बे आदि लेईने सरयाता उपजे ने मरयाता चये ॥

॥ अठारमु आउखा द्वार कहे छे ॥

समुचे नारकीनु आउखो जघन्य दम हजार वर्षनु । उत्कृष्टो आउखो तेरीस सागरोपमनु । हवे प्रथम नरके जघन्य दम हजार वर्षनु । उत्कृष्टो एक सागरोपमनु । बीजी नरके जघन्य एक सागरोपमनु । उत्कृष्टो तीन सागरोपमनु । त्रीजी नरके जघन्य तीन सागरोपमनु उत्कृष्टो सात सागरोपमनु । चौथी नरके जघन्य सात सागरोपमनु । उत्कृष्टो दस सागरोपमनु । पाचमी नरके जघन्य दस सागरोपमनु । उत्कृष्टो सत्तरा सागरोपमनु । छट्टी नरके जघन्य सत्तरा सागरोपमनु । उत्कृष्टो बावीस सागरोपमनु

सातमी नरके जघन्य चासीस सागरोपम नु । उत्कृष्टो तैत्रीस सागरोपमनु ॥ हवे भुवनपति नी दस जाती तेहना बीस इद्र तेहना नाम ॥ चमरेंद्र, चलेंद्र, धरणेंद्र, भूतानेंद्र, वेणुदेव, वेणुदाली, हरिकृत, हरिसिंह, अग्निमिह, अग्निमाणव, पूरण निमिठ, जलकृत, जलप्रम, अमितगति, मृगनाहन, वेलव, प्रभजन, घोम, महाघोम, ते बीस मध्ये चमरेंद्रनी जाती नु जघन्य आउखो दस हजार वर्षनु । उत्कृष्टो एक सागरोपम नु । चमरेंद्रनी देवीनु जघन्य दस हजार वर्षनु । उत्कृष्टो साढात्रण पल्योपम नु । चलेंद्रनु जघन्य दस हजार वर्षनु । उत्कृष्टो एक सागरोपम भाभेरु चलेंद्रनी देवीनु जघन्य दस हजार वर्षनु । उत्कृष्टो साढाचार पल्योपम नु । हवे दक्षिण पासाना धरणेंद्र आदि लेई ने नव इद्र नु जघन्य आउखो दस हजार वर्षनु । उत्कृष्टो दोढ पल्योपम नु । तं नव इद्रनी देवीनु जघन्य आउखो दस हजार वर्षनु । उत्कृष्टो आउखो आढघा पल्योपमनु । तथा उत्तरना पासाना भूतानेंद्र आदि लेईने नव इद्र नु जघन्य दसहजार वर्षनु । उत्कृष्टो वे पल्योपम देशउणो । ने उत्तरना पासाना नव इद्रनी देवी नु जघन्य दसहजार वर्षनु । उत्कृष्टो एक पल्योपम देश उणो । पृथ्वीनाय नु जघन्य अतर मुहूर्त नु । उत्कृष्टो चासीस हजार वर्षनु । तथा वादर पृथ्वीना ६ भेद कहे सना गोपीचन्दनादिक ते नु उत्कृष्टो एक हजार

वर्षनु, बीजी सुधानामे पृथ्वी ते नदीनी भेखलादिक प्रमुख
 तेनु आउखो वार हजार वर्ष नु । त्रीजी बालुका नामे
 पृथ्वी ते मचित पेलु प्रमुख ते नु उत्कृष्टो चण्डहजार
 वर्षनु । चौथी मणमिल नामे पृथ्वी ते सुरमादिक ते नु
 उत्कृष्टो सोल हजार वर्ष नु । पाचमी शरकरा नामे पृथ्वी
 ते सुपर्णादिक ते नु उत्कृष्टो अठाग हजार वर्षनु । छट्ठी
 खर नामे पृथ्वी ते रत्नादिक ते नु । उत्कृष्टो वागीम
 हजार वर्षनु । पाणी नु उत्कृष्टो सात हजार वर्षनु ।
 अग्नि नु उत्कृष्टो त्रण दिवसनु । वायुकायनो उत्कृष्टो
 तीन हजार वर्षनु । वनस्पतिनु उत्कृष्टो दम हजार वर्ष
 नु । बेंद्रीनु वार वर्षनु । तेंद्रीनु उत्कृष्टो योगण-
 पच्चास दिवसनु । चौरिंद्रीनु उत्कृष्टो छे मासनु ।
 पाच थावरनु त्रण त्रिकलेंद्री ए आठ दडके सर्ग जीवनु
 जघन्य अतर मुहूर्तनु जाणनो । हवे तिर्यच पचेंद्री ना दस
 भेद लिरयते ॥ ते मध्ये जलचर गर्भजनु जघन्य अतर
 मुहूर्तनु । उत्कृष्टो एक पूर्वकोडी वर्षनु । जलचर समुच्छि-
 मन, उत्कृष्टो आउखो पूर्वकोडी वर्षनु । थलचर गर्भजनु
 उत्कृष्टो त्रण पल्योपमनु । समुच्छिम थलचरनु चौरासी
 हजार वर्षनु । गर्भज खेचरनु उत्कृष्टो आउखो पल्यो-
 पमनु असख्यातमो भाग । समुच्छिम खेचरनु उत्कृष्टो बहो-
 तेर हजार वर्षनु । गर्भज उरपरिमर्षनु उत्कृष्टो एक पूर्व-

कोडी वर्षनु । समुद्रिम उरपरिसर्पनु उत्कृष्टो त्रेपन हजार
 वर्षनु । गर्भज भुजपरिसर्पनु उत्कृष्टो एक पूर्वकोडी वर्ष
 नु । समुद्रिम भुजपरिमर्ष नु उत्कृष्टो घेतालीम हजार
 वर्षनु । ए सर्वे उत्कृष्ट आउर्यो जाण्यो ॥ दमभेद तिर्यचना
 रक्षा ते मर्षनु जघन्य आउर्यो अतरमुहूर्तनु छे । गर्भन
 मनुष्य नु उत्कृष्टो आउर्यो तीन पल्योपमनु जघन्य अतर
 मुहूर्त नु । व्यतर नु जघन्य दसहजार वर्षनु उत्कृष्टो एक
 पल्योपम नु । व्यतरनी देवी नु जघन्य दसहजार वर्षनु उत्कृष्टो
 अठधा पल्योपमनु । योतिपना पाच भेद वहे छे ॥ चन्द्रमा,
 सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारा । ते मध्ये चन्द्रमानु जघन्य आउर्यो
 पात्र पल्योपमनु । उत्कृष्टो एक पल्योपम ने एक लाख वर्षनु ।
 चन्द्रमानी देवीनु उत्कृष्टो अर्धपल्योपम अने पचास हजार
 वर्ष नु । सूरज नु उत्कृष्टो एक पल्योपम अने हजार वर्षनु ।
 सूर्यनी देवी नु उत्कृष्टो अर्धा पल्योपम अने पाचसौ वर्षनु ।
 ग्रह नु उत्कृष्टो एक पल्योपम नु । ग्रहनी देवीनु
 उत्कृष्टो अर्धा पल्योपम नु । नक्षत्र नु उत्कृष्टो अर्धा पल्यो-
 पम नु । नक्षत्रनी देवी नु उत्कृष्टो पात्र पल्योपम भाभेरो ।
 एक आठे भागे जीवनु जघन्य आउर्यो पात्र पल्योपमनु ।
 तारा नु उत्कृष्टो पात्र पल्योपमनु । जघन्य एक पल्योपमनो
 आठमो भाग । तारानी देवीनु उत्कृष्टो एक पल्योपमनो
 आठमो भाग भाभेरु जघन्य एक पल्योपमनो आठमेभाग ॥

ह्ये पैमाणिक देव नु आउर्यो रुहेडे ॥ सौधर्म देवल्लोके जघ-
 न्य एक पल्लोपम नु । उत्कृष्टो वै मागरोपमनु । ईशान
 देवल्लोके जघन्य एक पल्लोपम भाभेरु । उत्कृष्टो वै सागरो-
 पम भाभेरु । त्रीजे मनतुमार देवल्लोके जघन्य वै सागरो-
 पमनु । उत्कृष्टो मात सागरोपमनु । चौथा महेंद्र देवल्लोके
 जघन्य वै सागरोपम भाभेरु । उत्कृष्टो मात सागरोपम
 भाभेरु । पाचमे त्रद देवल्लोके जघन्य मात सागरोपमनु ।
 उत्कृष्टो दस मागरोपमनु । छठे लातरु देवल्लोके जघन्य
 दस मागरोपमनु । उत्कृष्टो चवद मागरोपमनु । सातमे
 शुक्र देवल्लोके जघन्य चवद सागरोप नु । उत्कृष्टो मचरा
 मागरोपमनु । आठमे देवल्लोके जघन्य सतरा सागरोपमनु ।
 उत्कृष्टो अठारा मागरोपम नु । नवमे अनन्त देवल्लोके
 जघन्य अठारा मागरोपम नु । उत्कृष्टो ओगणीम सागरो-
 पम नु । दसमे प्रणत देवल्लोके जघन्य ओगणीम सागरोपम
 नु । उत्कृष्टो बीस मागरोपमनु । ग्यारमे अरण्य देवल्लोके
 जघन्य बीस सागरोपमनु उत्कृष्टो इन्नीस मागरोपमनु ।
 बारम अन्युत देवल्लोके जघन्य इन्नीस मागरोपमनु ।
 उत्कृष्टो बावीस मागरोपमनु । प्रथम नव ग्रेवे के जघन्य
 बावीस मागरोपमनु । उत्कृष्टो तेनीस सागरोपमनु । बीजे
 नवग्रेवे के जघन्य तेनीस सागरोपमनु । उत्कृष्टो चौवीस
 मागरोपमनु । त्रीजे नवग्रेवेके जघन्य चौवीस सागरोपमनु ।

उत्कृष्टो पचीस सागरोपमनु । चौथे नवग्रेवेके जघन्य
 पचीस सागरोपमनु । उत्कृष्टो छत्रीस सागरोपमनु । पाचमे
 नवग्रेवेके जघन्य छत्रीस सागरोपमनु । उत्कृष्टो सत्तावीस
 सागरोपमनु । छनवट्टे ग्रेवेके जघन्य सत्तावीस सागरोपमनु ।
 उत्कृष्टो अट्ठावीस सागरोपमनु । सातमे नवग्रेवेके जघन्य
 अट्ठावीस सागरोपमनु । उत्कृष्टो ओगणतीस सागरोपमनु ।
 आठमे नवग्रेवेके जघन्य ओगणतीस सागरोपमनु । उत्कृष्टो
 तीस सागरोपमनु । नवमे ग्रेवेके जघन्य तीस सागरोपमनु ।
 उत्कृष्टो एक्कीस सागरोपमनु ॥ त्रिजय, वैनयंत, जयत
 अपराजीत ए चार विमाने जघन्य एक्कीस सागरोपमनु, ।
 उत्कृष्टो तेतीस सागरोपमनु । सर्वार्थ मिद्ध जघन्य तथा
 उत्कृष्टो आउखो तेतीस सागरोपम पुरो ॥

॥ हवे ओगणीसमु पर्याप्ती द्वार वहे ने ॥

पर्याप्ती छ ना नाम वहे छे । अहार पर्याप्ती, शरीर
 पर्याप्ती, इट्टी पर्याप्ती, मासोस्नास पर्याप्ती, भाषा पर्याप्ती,
 मन पर्याप्ती नारकी दस भुवनपति, व्यंतर, वैमाणिक,
 तिर्यंच पचेंद्री, मनुष्य ए सोल टडरे छे पर्याप्ती । पाच
 थावरने चार पर्याप्ती अहार, शरीर, इट्टी, मासोस्नास ॥
 वेंद्री तेंद्री, चोरिंद्री, अमनी पचेंद्र ने मन विना पाच
 पर्याप्ती होय ॥

॥ वीममु अहार द्वार कहे छे ॥

अहारना ऋण नाम ॥ ओम्हा अहार, रोम अहार, फल अहार । नारकी, दमभुवनपति, व्यतर, योतीपी, वैमाणिक, पाच थावर ए योगणीस दडके ने अहार, ओम्हा ने रोम ए ने । तिर्यचपचेंद्री अने मनुष्य ने ऋण पिफ्लेंद्री ए पाच दटके ऋण अहार पामे ॥

॥ इकीसमु गतागति द्वार कहे छे ॥

नारकी थी चर्वाने तिर्यच पचेंद्री अने मनुष्य माहीं जाय अने ए वे माहीं आवे । दम भुवनपति व्यतर, योतिपी, वैमाणिक, पहिला बीजा देवल्लोके गतागति रुहेछे । पृथ्वी पाणी, वनस्पती, तिर्यच पचेंद्री अने मनुष्य ए पाच गति । मनुष्य अने तिर्यचपचेंद्री ए वे दडके आगति, त्रीजादेवल्लोकी माडी आठमा देवल्लोक सुधी तिर्यचपचेंद्री अने मनुष्य ए ने दडकनी गति, एहीज वे दटकनी आगति, नवमा देवल्लोकथी माडी सर्वार्थ मिद्ध सुधी मनुष्य ने आगति । अने मनुष्य ने गति मनुष्य ने चोवीमनी गति, तेउ वाऊ मिना वावीम नी आगति, तिर्यच पचेंद्री चोवीमनी गति अने चोवीसनी आगति, ऋण पिफ्लेंद्री, पाच थावर, तिर्यच पचेंद्री, मनुष्य ए दस दडकनी आगति, एहीज दमनी गति,

नारकी बिना त्रीम नी आगति, तेऊ प्राऊ ने तेगडेयता ।
 नारकी, मनुष्य बिना ६ नी गति । अने तेर देवता नारकी
 बिना १० नी आगति छे ॥ इति २१ द्वार सपूर्ण ॥

॥ हवे चावीसमु वेद द्वार कहे छे ॥

वेद तीनना नाम ॥ पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुमर वेद ।
 नारकी, पाचथावर, प्रण पिण्डेरी ए नम दडके एक
 नपुमर वेद । नियंच पचेद्री, मनुष्यने प्रण वेद । देवताना
 तेर दडके स्त्री ने पुरुष ए वेद पामे ॥

॥ हवे त्रेवीसमु भुवन द्वार कहे छे ॥

पहिली नरके ^{३०} ~~३०~~ लाख नरका नामा, तीजी नरके
 पचीस लाख नरका नामा, तीजी नरके पन्नगलाख नरका
 नामा, चौथा नरक दसलाख नरका नामा, पाचमी नरके
 प्रणलाख नरका नामा, छठी नरक एक लाख मा पाचउणा
 नरका नामा, सातमी नरके पाच लाख नरका नामा मने
 अईने चागामी लाख नरका नामा जाणत । तथा दक्षिण
 ना पामाना दम इद्रना भुवन रहे छे । चमरेद्र ने चौतीम
 लाख भुवन, वरुणेंद्रने चुमालीम लाख भुवन, रेणुदवने अटतीम
 लाख भुवन, हरिभूत ने चालीम लाख भुवन, अग्निभिह ने

चालीस लाख भुवन पूर्णने चालीस लाख भुवन जलरतने
 चालीस लाख भुवन, अभितगति ने चालीस लाख भुवन,
 बलनिक ने पञ्चमलाख भुवन, घोसने चालीस लाख भुवन,
 दक्षिण पामा ना दस इद्रना चार ऋषी ने छ लाख भुवन
 जाणना ॥ हवे उत्तरना दस इद्रना भुवन कहे छे । बलेंद्रने
 त्रीस लाख भुवन, भुतानेंद्र ने चालीस लाख भुवन, वेणु-
 दाली ने चोत्रीस लाख भुवन हरिसिंह ने छत्रीस लाख
 भुवन, अग्निमानवने छत्रीस लाख भुवन, त्रिपीठ ने छत्रीस
 लाख भुवन, जलप्रभ ने छत्रीस लाख भुवन, मृगावाहण ने
 छत्रीस लाख भुवन, परभजण ने छियालीस लाख भुवन,
 महाशोष ने छत्रीस लाख भुवन छे । तेथी उत्तर दिशी ना
 दस इद्रना भुवन छे ते प्रत्येक चार लाख श्रोछा जाणना,
 मर्त धई ने भुवनपतिना भुवन सात ऋषी ने बहोतेर लाख
 भुवन । हवे भुवनपतिना भुवन कहे छे । एक लाख अस्सी-
 हजारयोजन रत्नप्रभा पृथ्वीनोपिंडछे । ते मध्ये एक हजार
 योजन ऊपर मुक्रिये, हजार योजनहेंटा मुक्रिये, बीचमा
 एक लाख अठयोत्तरहजार योजन नी पोहोलाण छे । ते माहें
 मरयाता अमरयाता योजन ना भुवनपतिना भुवन छे ।
 सुक्ष्म पाचथावर तीनत्रिगलेंद्री, तिर्यंच पंचेंद्री लोफने देशे
 देशे छे । मनुष्य, वादरअग्निक्राय अदीद्वीपमा छे । व्यतर देवता
 रत्नप्रभापृथ्वी नो ऊपरलो एक हजार योजन ते मध्ये एकसौ

योजन उपर मुत्रिये अने मो योजन नीचे मुत्रिये बीचमें
 आठमौ योजन माहीं व्यतरना अमरुयाता नगर छे । ते नगर
 जघन्य भगतचेत्रजेरडाछे । मध्य महाप्रिदेह जेरडा छे, उत्कृष्टा
 जवृद्धीप जेरडा छे, योतिपी ना विमान असरयाता छे सभु
 तला पृथ्वी थी माडीने सातमौ ने नेतु योजन तारा छे, ते
 उपर दस योजन सूर्य छे, ते उपर अस्मी योजन चन्द्रमा
 छ, ते ऊपर चार योजन नक्षत्र छे, ते ऊपर चार योजन
 बुधछे, ते ऊपर ऋण योजन शुक्र छे, ते ऊपर ऋण योजन
 गुरु छे, तेऊपर ऋण योजन मंगल छे, ते ऊपर ऋण योजन
 शनीश्वर छे । हवे वैमाणिक ना विमाननी मरया कहे छे ।
 सौधर्म देवलोकें बरीस लाख विमान छे, ईशान देवलोकें
 अष्टाधीस लाख विमानछे, मनतकुमार देवलोकें बारलाख
 विमान छे, महेंद्र देवलोकें आठ लाख विमान छे, ब्रह्मदेव-
 लोकें चारलाख विमानछे, लातक देवलोकें पचास हजार
 विमान छे, शुक्र देवलोकें चालीस हजार विमान छे, महस्त्रा
 देवलोकें छ हजार विमानछे, आनत प्राणत देवलोकें चारसौ
 विमान छे, अरण्य अच्युतने तीनमौ विमान छे, नम्रवैवैर
 माहीं प्रथम त्रीके एकपौ ग्यारा विमानछे, बीजे त्रीके एक
 सौ सात विमान छे त्रीजे त्रीके साँ विमान छे ते ऊपर अनुत्तर
 विमान पाच छे, ते ऊपर बारयोजन मिद्वमिलाछे ।

॥ हवे चौबीसम् प्राण द्वार कहे छे ॥

हवे दम प्राणना नाम कहे छे । पाच इंद्री, जण जल, ग्रासोस्वास, आउर्रो ए दम प्राण छे । नारकी तेर देवता, मनुष्य तिर्यंच पंचेद्री ए मोल दडके दम प्राण, पाच थापर ने चार प्राण फरसद्री कायबल, सामोस्वास, आउर्रो, नेद्री ने ६ प्राण । फरसेंद्री, रसेंद्री, जचनजल, कायबल, सामोस्वास, आउर्रो । तेंद्रीने सातप्राण नारु सहित करिये छे । चोखिंद्री ने आठ प्राण आस सहित करिये छे ॥

॥ हवे पचवीसम् सपदा द्वार कहे छे ॥

सपदा तेवीस ना नाम । चक्ररत्न, त्र्यम्बरत्न, दडरत्न, खटगरत्न, कागणीरत्न, चर्मरत्न, मणीरत्न, ए सात एकेंद्री रत्न छे । गाथापति, सेनापति, पुरोहित, वाधिक, अश्वरत्न, गजरत्न, स्त्रीरत्न ए सात पंचेद्री । तिर्यंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, केजली, मानु, श्रावक, मम्पकत्त दृष्टी, मडलिक-राजा ए नउ निधान प्रथम नरकनो निकल्यो जीव सात एकेंद्री रत्न विना सोल सपदा पामे । बीजी नरकनो निकल्यो जीव सात एकेंद्री रत्न चक्रवर्ती विना पन्जर सपदापामे श्रीजी नरकनो निकल्यो जीव सात एकेंद्री चक्रवर्ती जलदेव, वासुदेव, विना तेर सपदा पामे । चौथी नरकनो निकल्यो

जीव त्र्यंकर विना बार सपदा पामे । पाचमी नरकनो
 निरुल्यो जीव केवली विना ग्यार सपदा पामे । छट्ठी नर-
 कनो निरुल्यो जीव दस सपदा पामे मातु विना मातमी
 नरकनो निरुल्यो जीव व्रण सपदा पामे । अश्व, गज, सम-
 र्हित ये तीन ॥ दस भुवनपति, व्यतर, योतिषी ए बार दड-
 कनो निरुल्यो जीव त्र्यंकर वासुदेव विना एकीस सपदा
 पामे । पृथ्वी, पाणी, मनम्पति, त्र्यंच पंचेद्री, मनुष्य ए
 पाच ददकनो निरुल्यो जीव त्र्यंकर, चक्रवर्ती, बलदेव,
 वासुदेव विना श्रोगणीस सपदा पामे । तेउ, गउ, नो निरु-
 ल्यो जीव सात रत्न एकेद्री अश्व, गज, सहित नव सपदा
 पामे । व्रण विरुलेद्री नो निरुल्यो जीव त्र्यंकर, चक्रवर्ती,
 बलदेव, वासुदेव, केवली विना अठार सपदा पामे । वैमाणिक
 मा प्रथम देवलोक अने त्रीजा देवलोक नो निरुल्यो जीव
 तेकीस सपदा पामे त्रीजा देव लोकथी माटी आठमा देवलोक
 सुधी नो निरुल्यो जीव मात एकेद्री रत्न विना मोल सपदा
 पाम । नवमा देवलोकथी माडी नव अनेक सुधीनो निरुल्यो
 जीव जान एकेद्री, अश्व, गज विना चण्ड सपदा पामे । पाच
 अनुत्तर विमान नो निरुल्यो जीव वासुदेव विना आठ
 निधान पाम ॥

॥ हवे छब्बीसमुँ धर्म द्वार कहे छे ॥

तिर्यंच पचेंद्री, मनुष्य ने करणी रूपी धर्म छे बायीम
दडके करणी रूपी धर्म नथी ॥

॥ सत्तावीसमुँ योनी द्वार कहे छे ॥

सात लाख पृथ्वी जाय, सात लाख अप्पकाय, सात
लाख तेंडकाय, सात लाख वाडकाय, दम लाख प्रत्येक
वनस्पति काय, चौदलाख साधारण वनस्पति काय, ने लाख
तेंद्री, ने लाख चौरिंद्री नारकीनी चार लाख योनि, चार
लाख तिर्यंच पचेंद्री नी, चार लाख देवतानी, चौद लाख
मनुष्य नी ए चौरामी लाख जीजा योनी थई ॥

॥ हवे अट्ठावीसमुँ कुल कोटी द्वार कहे छे ॥

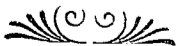
नारकीनी पचीस लाख कुल कोटी, देवतानी छब्बीस-
लाख कुल कोटी, पृथ्वीनी बार लाख कुल कोटी, पाणी
नी सात लाख कुल कोटी, अग्निनी तीन लाख कुल कोटी,
वाड नी सातलाख कुल कोटी, वनस्पतिनी अट्ठावीस लाख
कुलकोटी, बेंद्री नी सात लाख कुल कोटी, तेंद्रीनी आठ
लाख कुल कोटी, चौरिंद्रीनी नव लाख कुल कोटी, मनुष्यनी
बार लाख कुल कोटी, तिर्यंचपचेंद्री ना पाच भेद ॥ जलचर

नी माडीवार लार कुळ कोटी, अलार नी दम लार कुळ
कोटी, खेचर नी वारलाग कुळ कोटी उरपरि सर्पनी दस
लार कुळ कोटी, भुनपरिसर्प नी नत्र लार कुळ कोटी मर्
एर क्रोड अने साडीमत्ताणु लार कुळ कोटी जाणवी ॥

॥ हवे ओगणात्रीसमुं अल्प बहुत्व द्वार कहे छे ॥

मर्त्री गर्भज मनुष्य थोडा, तेथी वादर अग्नि ना
जीव असरयाता गुणा अधिक, तेथी त्रैमाणिक ना जीव
असरयाता गुणा अधिक, तेथी नारकी ना जीव असरयाता
गुणा अधिक । तेथी व्यतर ना जीव असरयाता गुणा ?
अधिक, तेथी योतिपना जीव असरयाता गुणा अधिक ।
तेथी चौरिंद्री ना जीव असरयाता गुणा अधिक तेथी
पंचेद्री ना जीव विशेषाधिक, तेथी त्रैद्री विशेषाधिक, तेथी
तेद्री ना जीव विशेषाधिक, पृथ्वीशयना जीव असरयाता
गुणाधिक तेथी वाउ कायना जीव असरयाता गुणाधिक
तेथी अष्पशय ना जीव असरयाता गुणा अधिक तेथी वन
स्पति काय ना जीव अत गुणा अधिक होय ।

॥ इति ओगणात्रीस द्वार सपूर्ण ॥



अथ मिथ्यात्व गुणठाणानि स्थितौ कहे छे ॥

अभि आसरी अनादि अनत, भवि आसरी अनादी
मात । पढी आसरी सादी मात । मिथ्यात्व गुणठाणानो
लक्षण कहे छे ॥ जेम कोई माणस धतूगनु बीज साधू होय
तेम ते सफेद वस्तू ने पीली वस्तू देखे तेमते मिथ्यात्व
गुणठाणा वालो छे । ते सुदेवने कुदेव माने सुगुरू ने कुगुरू
माने अने जे हिंसा धर्म छे तेने अहिंसा माने । तेम वधु
विपरीत माने त्यारे कोई तरक करे छे के तेनामा एक गुण
नथी त्यारे तेने मिथ्यात्व भूमि स्थल कहिये, तो सामो
माणस रहे, के मर्य जीमो ने अक्षरनो अनतमो भाग उघाडो
छे मर्य ने आठ रुचक प्रदेण छे तेमा भविने निर्मल
होय । अभिने भासा होय । माटे तेने मिथ्यात्व गुणठाणो
कहिये, त्यारे सामो तरक करे छे, के कोई दिवस मोक्षे जमे
नोके हा भवि हसे तो कोईकरार समकित पामी मोक्ष हेतूनी
क्रेया करी मोक्षे जमे । माटे तेने मिथ्यात्व गुणठाणु कहिये ।

॥ हवे सास्वादन गुणठाणा नु लक्षण कहे छे ॥

अधन्य उत्कृष्टी छ आसलिङ्गानी स्थितौ ।
सास्वादन गुणठाणु मिथ्यात्वथो अनत गुणो
वेशुद्ध ने मिश्रथी अनतगुणो हीन तेमाथी नपु क

वेदने मिश्र्यात्व मोहनी वे प्रकृति गई तेथी ररीने विशुद्ध थयु । जेम कोई माणमे गीर साधी होय अने पट्टी वमी नारे पण तेनु स्याद जाय नहीं । हवे मिश्र गुणठाणानी स्थिती कहे छे ॥ जपन्व एर समय उत्कृष्टी अतर मुर्तनी होय । माम्पादनथी अनत गुणो विशुद्ध ने अपिग्ती थी अनत गुणो हीन, तेमाथी अनतानु रथी चौकडीने स्त्री वे ए पाच प्रकृती गई । तेथी विशुद्ध थयो ।

॥ हवे मिश्र गुणठाणा नु लक्षण कहे छे ॥

समन्वितने मिश्र्यात्व वे मलीने मिश्रयाय मिश्र गुण ठाणा बालाने जैनधर्म उपर राग नहीं डेण पण नहीं । कट्टी आपेतो प्रतर मुहूर्त सुत्री रहे ॥ ४ ॥

हवे चौथु अविरेती गुणठाणानी स्थिती कहे छे,

जध य अतर मुर्तनी ने उत्कृष्टी नत्रीम मागगेपमनी, ने मिश्रथी अनत गुणो विशुद्ध, ने डेण पिग्तीथी हीण तेमा थो अनतानु व गी चौकडी, न ररा माहना, त सात प्रकृति जाय ने अपिग्ती गुणठाणे रगतता वण प्रसारे नीय छे एक जोव जाये छे आदरता नहीं, ने पालता नहीं, न श्रेणिग् राजानी पेटे जाणगे, एरवाय जाण छे आदरे छे ने पालतो नहीं ने यत्ना आनरा जाणवा, एर जीय जाणे छे आदरता

नदी ने पाले छे ते अनुत्तर वैमान ना देखा जायना ॥५॥

हवे पाचमां देशविरती गुणठाणानी स्थिति कहे छे

जवन्य अतर मुहूर्त ने उत्कृष्टी देश उणी पूर्व कोटी वर्षनी, हवे अविरती गुणठाणावी अनत गुणो विशुद्धने प्रमत्तवी हीन, तेमावी बीजा कपायनी चौरुडी गई तेथी विशुद्ध थयो, हवे तेहनो लक्षण कहे छे देशविरती गुण ठाणो प्रतीतो जीव नोमारसीवी माडी ने धार प्रत उचरे, पण देश करी उणो तेमाथो मर्ष विरती गुण उणो छे ॥ ६ ॥

॥ हवे छट्टु प्रमत्त गुणठाणानो स्थिति कहे छे ॥

जवन्य अतर मुहूर्त उत्कृष्टी देशे उणी पूर्व कोटी वर्षनी देशविरतीथो अनत गुणो विशुद्ध, ने अप्रमत्तवी हीण तेमाथी बीजा कपायनी चौरुडी गई तेथी ररीने विशुद्ध थयो । हवे तेनो लक्षण कहे छे ॥ प्रमत्त गुणठाणा बालो पाच प्रमादे करीने सहित छे तेया तेना अध्येसाय पण मलीन छे तेनु चारित्र पण मलीन छे ॥ ७ ॥

॥ हवे अप्रमत्त गुणठाणानी स्थिति कहे छे ॥

जवन्य अतर मुहूर्तनी ने उत्कृष्टी देशे उणी पूर्व कोटी वर्षनी हवे प्रमत्तवी अनत गुणो विशुद्ध ने अप्रमत्त कारणवी अनत गुणो हीण ने तेमाथी सौरुने अरति गई, हवे तेनो लक्षण

कहेले के अप्रमत्त गुणठाणा वालो पाच प्रमाटे र्गी रहि
 होय तेथी तेना चारित्र पण निर्मल होय ते तना अध्यवसाय
 पण निर्मल होय ॥ ८ ॥

हवे अपूर्व करण गुणठाणानी स्थिती कहे छे

ब्रह्मण्य एक समय उत्कृष्ट अत्र मुर्तनी, ह
 अप्रमत्तयी अनत गुणो विशुद्ध ने अनिष्टती बादर गुण
 ठाणाथी अनत गुण हीन तेमां थी भय शौर हास्य र्ग
 गई तेथी विशुद्ध थयो । हवे तेनो लक्षण रहे जे अपूर्व करण
 गुणठाणे वर्ततो जीव प्रण करण करे छे यथा प्रवृत्तिकरण
 अपूर्वकरण अनिष्टतिकरण ममय समयमे पल्लोपमनो अत्र
 ख्यातमो भाग सपावतो सपावतो पाच जाना करे, स्थिति
 घातरस, घातगुण, सक्रमणगुण, श्रेणी, अपूर्ववध ए पाच
 वाना तेज करतो २, अतर मुहूर्तमा ते यथाप्रवृत्ति करण करे
 ममय समयमा पाच वाना सपावतो अतर मुहूर्तमा यथा
 प्रवृत्ति करण थी, अनत गुणो विशुद्ध अपूर्व करण कर
 समय समयमा पाच वाना सपावतो अतर मुहूर्त अपूर्व करण
 थी अनतगुण विशुद्ध अनिष्टति करण करे, त्या आयु कर्म
 वर्जां । माते २ कर्मनी स्थिती सपावतीने, एकमोडा कोडी
 लाय ने हले त्याग प्रथी भेद थाय, प्रथी भेद ते शु अनादी

कालनी राग द्वेपनी गाठ भेदी नाखीयेते । हने अपूर्व गुण
ठाणु नाम पत्थो के कोई दिवस पाम्यो नथी, ते नउ शु
पाम्यो तोके समकित पाम्यो ॥ ९ ॥

हवे अनिवृति वादर गुणठाणानी स्थिती कहे छे

जघ य एक समय, उत्कृष्टी अन्तर मुहूर्तनी । हने
ते अपूर्ण करण थी अनत गुणो विशुद्ध अने सुद्धम सपराय
थी हीण, ते माथी सजलना लोभ पिना त्रिक ने पुरप जेद
गयो । हने तेनो लक्षण कहे छे श्रेणिपर चढता सर्व जीवना
अग्रवमाय सरसा होय छे । जरा पण फेरफार नथी,
करीने अनिवृति थयो ॥ १० ॥

हवे सुद्धम सपराय गुणठाणानी स्थिती कहे छे

जघन्य एक समय, उत्कृष्ट अन्तःमुहूर्तनी, हवे अनिवृति वादर
गुणठाणाथी अनतगुण विशुद्ध, ने उपशान्त मोहनीथी हीण,
तेमाथी सजलनो लोभ घणो जाडो हतो ते सुद्धम मात्र रख

हवे उपशातमोहनी गुणठाणानी स्थिती कहेछे

जघन्य एक समय नी, उत्कृष्टी एक मुहूर्त ते सुद्धम गुण
ठाणा थी अनत गुणो विशुद्ध, ने क्षीण मोहनी थी हीण,
तेमा थी मोहनी कर्मनी प्रकृति उपमावी राखी छे । केनी

रीते के काटव वाला पाणी माहे श्राव्य वेणी गयो छे ।
पण जो कोडकू माणस अन्दर पगमूके तो बधो श्राव्य उपर
श्याधी जाय । तेना रीते उप समायी राखी छे ॥ १२ ॥

॥ हवे चीण मोरगुण्ठाणानी स्थिती वहेछे ॥

जघ य एक समय, ने उत्कृष्टी अन्तर मुहूर्तनी । उपशा त
मोहनी गुण ठाणायी अनन्तगुण विशुद्ध ते मजोगी थी हीण
तेमाहे थी मोहनी कर्म सपाव्यो । हवे तेनो लक्षण कहे छे । जारे
मोहनी कर्मनो क्षय ययो । त्यारे यथार्यात चारित्रनी
प्राप्ति थई । जे २ कोड माणस समुद्रमा तरमाने पव्यो । तेने
तरता २ थाय लाग्यो । त्यारे द्वीप उपर बेमीने, प्रिसामो
खाय छे । ने एम प्रिचारे छे या थोडु पाणी छे । तेने हम
णा तरी जइश, तेम था ससार समुद्रने पिणे तरता २ थाक
लाग्यो, त्यारे यथार्यात चारित्र रूपी द्वीप मलयो । त्या
बेमीने प्रिसामो खाय छे, ने एम प्रिचार छे, के श्हारे हवे
थोडी ससार छे, ते हमणा तरी नइश ॥ १३ ॥

॥ हवे मजोगी गुण्ठाणानी स्थिती कहेछे ॥

जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्टी टेंगे उणी पूर्वकोडी
वर्षनी । हवे तेनो लक्षण कहेछे । तिहा चारे घातिया
कर्मनो क्षय ययो । मन वचन कायाना जोग मोरुला छे,

हाले छे, चाले छे, देगना आपे छे ॥ १४ ॥

॥ हवे अजोगी गुणठाणानी स्थिती कहे छे ॥

पाच लघु अक्षर

नी थ इ-उ ऋ लृ अघाती कर्मनो दाय कर्मो । मन
प्रचन कायाना योग रूपे । सेलेगी करण करे ॥ सम्पूर्ण ॥

॥ १४ गुणठाणा द्वारं लिख्यते ॥

ते चन्द्र गुणठाणा उत्तर चालसे, ते गुणठाणा चन्द्र
ममयागजी सूत्र माही कहया छे । पचीस द्वारना नाम
रहे छे । नामद्वार १, लक्षणद्वार २, स्थितीद्वार ३, क्रिया-
द्वार ४, सत्ताद्वार ५, बन्धद्वार ६, उद्वेद्वार ७, उदीरणाद्वार
८, निर्भराद्वार ९, भावद्वार १०, कारणद्वार ११, पगीमा-
द्वार १२, आत्माद्वार १३, जीवनाभेद द्वार १४, गुणठाणा
द्वार १५, योगद्वार १६, उपयोगद्वार १७, लेख्याद्वार १८,
हेतुद्वार १९, मार्गणाद्वार २०, ध्यानद्वार २१, जीयायोनी-
द्वार २२, ढडरुद्वार २३, सनतनिरुतुद्वार २४, अल्पीग्रहन्व
द्वार २५ ॥

॥ हवे नामद्वार कहे छे ॥

पहिलो विख्यात गुणठाणो, तीजो मास्यादन गुणठाणो,
तीजो मिश्र गुणठाणो, चौथो अहत्ती मन्दिन्द्रष्टी गुण-

ठाणो पाचमो देशवृत्ती गुणठाणो, छट्टोप्रमत्त गुणठाणो
 मातमो अप्रमत्त गुणठाणो, आठमो अपूर्ण गुणठाणो, नवमो
 अनिर्वृत्ती वादर गुणठाणो, दसमो सुन्म मपराय गुणठाणो
 इग्यारमो उपशात मोह गुणठाणो, बारमो खीणमोह गुण-
 ठाणो, तेरमो सयोगी गुणठाणो, चरदमो अयोगीगुणठाणो

॥ हवे लक्षण ठार लिख्यते ॥

पहिलो मिथ्यात्व गुणठाणानो लक्षण कहे छे ।

श्रीगीतगण निवारण अधिऊ ओळी प्ररूपे । विपरीत सरदे, जिन
 धर्म उपर दुष्ट भाव राखे, कृदेव, कुगुरू, परिणाम दुधर्म कुशास्त्र
 ४ बोल ऊपर आम्ना राखे । तेहनै मिथ्यात्व गुणठाणो कहिये
 छे । त्यारे श्रीगीतमन्वामीजी हाथ जोडी मानमोडी विनय
 नमस्कार करी । श्री भगवत ने पृष्ठता हया, स्वामीनाथ
 एहने शु गुण निपन्यो, त्यार श्री भगवत दरनी बोलया
 अहो गीतम गुण ए निपन्यो जीवन्पी दड', र्मस्पी ला
 कडी, चागतिने बोरीस दडके भमे पण शातानो टिकाणो
 नथा । हरे मरा माम्वादन गुणठाणानो लक्षण कहे छे ।
 तेहनो दृष्टात रहे छे । जेम कोईक मनुष्य सोर ग्याडनो
 भोजन जीम्यो हतो । ते समान तो समन्तित, पाछो वमन
 पूछे मित्रो त्यारे कोई पुरुष तु काई जीम्यो त्यारे कह्यो

खीरनो स्वाद रह्यो, ते समान सास्वादन समकित । बीजो दृष्टात घटानो नाद, पहिले तो गहिर गभीर शब्द निकले ते समान तो समकित, पाछो रणकारो रहिगयो, ते समान सास्वादन गुणठाणो । त्रीजो दृष्टात जीव रूपी आचो, अने परिणाम रूपी डाल, समकित रूपी फल, परिणाम रूपी डाली थी समकित रूपी फल । हुटो ते मिथ्यात्व रूपी धरती त्या आव्यो तेहने सास्वादन गुणठाणो कहिये । त्यारे श्री गोतमस्वामीजी पूछता ह्या कि स्वामिनाथ एहने शु गुण निपन्यो, त्यारे श्री भगवतनी बोल्या । अहो गोतम गुण ए निपन्यो, कृष्णपत्तनो शुक्र पक्ष थयो, अर्ध पुद्गल भोगवानो रह्यो । अर्धा रुपयानो दृष्टात जेम कोई पुरुष क्रोड रुपयानो देवनार हतो । ते नवाणु लाख नवाणु हजार नवर्सा माडानवाणु ढीधा अर्धोरुपयो रह्यो ।

हवे त्रीजा गुणठाणानो लक्षण कहे छे ।

हवे श्रीजा गुणठाणानो लक्षण कहे छे । त्रीजो मिथ्र गुणठाणो तेहनो दृष्टात जेहवो श्रीखडनो स्वाद मिठा समान तो समकित, अने खाटा समान मिथ्यात्व । अथवा अनादि काल नो उलटो हतो, तेहनो सुलटो थयो समकित सामो बैठो पण पग भरवा समर्थ नहीं । तेहने

मिश्रगुणठाणो कहिये । त्वारे श्री गोतमस्वामीजी पूछता हवा । स्वामिनाथ एहने शु गुण निपन्यो । त्वारे स्वामिनाथ बोल्या, गुण एह निपन्यो, क्रमादि ऋत्वनो कृष्ण पक्षी हतो तहनो शुद्ध पक्षी थयो । अर्ध पुद्गल भोगवनार रह्यो । अधेलीनो दृष्टात जाणवो ।

हवे चौथा गुणठाणानो लक्षण कहे छे ।

तेहनी प्रकृति [७] अनुतानुषाध्यो क्रोध^१, मान^२, माया^३, लोभ^४, मिथ्यात्व मोहिनी^५, मिश्र मोहनी^६, समस्ति मोहनी^७, तेहना भागा नव, पहिले भागे आगली ४ प्रकृति खपावे ३ प्रकृति उपसमावे, तेहने खयोउपममस्ति कहिये । बीजेभागे आगली ५ प्रकृति खपावे, २ प्रकृति उपसमावे तेहने खयोपमम समस्ति कहिये । त्रीजे भागे आगली ६ प्रकृति खपावे १ उपसमावे तेहने उपममस्ति कहिये । चौथे भागे आगली ४ प्रकृति खपावे २ प्रकृति उपसमावे १ प्रकृति वेदें तेहने खयोपसम वेदक समस्ति कहिये । पाचमे भाग आगली ५ प्रकृति खपावे १ प्रकृति उपसमावे १ प्रकृति वेदें तेहने खयोपमम वेदक समस्ति कहिये । छठे भाग आगली ६ प्रकृति उपसमावे १ प्रकृति वेदें तेहने उपमम वेदक समस्ति कहिये । सातमें भागे आगली ६ प्रकृति खपावे १ प्रकृति वेदें तेहने ख्यायक वेदक समस्ति कहिये ।

आठमें भागे प्रकृति ७ उपममात्रे तेहने उपमम समकित कहिये । नरमें भागे ७ प्रकृति सपात्रे तेहने सापक समकित कहिये । त्यारे चौथे गुणठाखे त्रारे जिमादिक नव पदार्थनो जाण होये । द्रव्यथकी १, खेयथकी २, काल थकी ३, भायथकी ४, नोकारभी आदि देई, वरसी तप मर-टवो । त्यारे श्री गोतमस्वामी पृच्छता हवा स्वामिनाथ एहनो-शु गुण निपन्यो त्यारे श्रीभगवत देवजी बोल्या, अहो गोतम गुण ए निपन्यो नरक गतिनु आऊवो १, तिर्यंच गतिनु आउखो २, स्त्री वेद ३, नपुंसक वेद ४ सुवनपतिनो ५ योतिपी नो ६ व्यतर नु आउखो ७ ए सात समकितमाही नबु न चाधे ॥ ४ ॥

हवे पाचमु देशवृत्ता गुणठाखा नो लक्षण कहे छे

पाचमो देशवृत्ती गुण ठाणो तेहनीप्रकृति अग्यारह साततो पहिले कही ते । अने प्रत्याख्याननुबधी क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, एम ११ प्रकृति खयोपसम करे त्यारे पाचमु गुणठाखेआत्रे जावादिक नर द्रव्य थकी ४ नोकारसी आदि देई वरसी तप सरदमो शक्ति परिणामे करे । त्यारे श्रीगोतमस्वामी पृच्छता हवा, हे भगवत शु गुण निपन्यो मनगत कहता हवा गुण ए निपन्यो जघन्य तो त्रीजे भवे मोक्ष जाय उत्कृष्टो सात आठ भव करी मोक्ष जाय ।

॥ हवे छट्टो गुणठाणानो लक्षण कहे छे ॥

तेहनी प्रकृति १५ श्कारे आगल कही ते, अने अप्र
त्याख्यानी क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, एम १५,
प्रकृति स्रयोपसम करे त्यारे छट्टे गुणठाणे आवे जीवादिक
नवपदार्थ नो जाण होरे द्रव्य धर्या जावजीव थरी । नोका
रसी आदि देह वरसी तप सरदवो । शक्ति प्रमाणे फरवो
त्यारे श्रीगोतमश्यामी कहता हवा । एनो गुण शु निपन्या
एहनो गुण ए निपन्यो जघन्यतो एहीजभवे मोक्ष जाय,
उत्कृष्टो सात आठ भव करी मोक्ष जाय ।

॥ हवे सात मा गुणठाणानो लक्षण कहे छे ॥

प्रकृति १५ आगल कहीने । स्रयोपसम एटलो
प्रिषेप मद विष कपाय निदा विगहा ए पांच भरी
प्रमाद जीव पडती ससारे ए पाच प्रमाद छाडे । त्यार
सातमें गुणठाणे आवे जीवादिक नव पदार्थनो जाण नोका
रसी देह वरसी तप करे त्यारे श्री गोतमश्यामी पूछता
हवा । उचर जघन्य एहीज भवे मोक्ष जाय । अथवा सात
आठ भवकरी मोक्ष जावे ।

॥ हवे आठमु गुणठाणानु लक्षण कहे छे ॥

अपूर्व करणने शुद्धध्यान आवे त्यारे आठमें गुणठाणे

आने । तिहा श्रेणी वे । एक उपसम श्रेणी, बीजी घायक श्रेणी, हवे उपसम श्रेणीना लक्षण कहेले, तेहनी प्रकृति २१, तेएम १५ आगल कही ते अने हास्य १, रती २, धरति ३, भय ४, भोग ५, दुःखा ६, एम २१ प्रकृति उपसमाप्ते त्वारे नवमें गुणठाणे आवे ।

॥ हवे दसमु गुणठाणा नो लक्षण कहे छे ॥

तेहनी प्रकृति २७ तेएम २१ तो आगल कही ते अने स्त्री वेद १, पुरुष वेद २, नपुंसक वेद ३, सजलनो क्रोध १, मान २, माया ३, एम २७ प्रकृति उपसमाप्ते । त्वारे दसमें गुणठाण आवे । तिहा काल करे तो ४ अनुत्तरविमान माहीज जावे । काल नहीं करे तो सजलनो लोभ हतो ते उपसमाप्तिने इग्यारमें गुणठाणे आवे । तिहा काल करे तो मर्धार्थ सिद्धी जाय । काल न करे तो पाछो लथडातो इग्यारमानो दसमें, तथा नवमें, तथा चौथे, तथा पहिले गुणठाणे आवे । त्वारे श्रीः गोतमश्यामी पूछता हवा । ए पाछो पढ्यो ते स्या थकी । श्री भगवतदेवजी बोरया, ए मोहनी कर्म सजलनो लोभ उपसमायो हतो ते पाछो प्रजस्यो । अग्नि दृष्टाते, जेम अग्नि माहे इधन मान्या आव्या सेनी ज्वाला उठे तेम मोहनी कर्म उपसमाव्यो हतो ते पाछो प्रजस्यो ।

॥ हवे चायक श्रेणीना लक्षण रुहे ३ ॥

वेहीच २१ प्रकृति खपावे तो नममे गुणठाणे आवे
 वेहीच २७ प्रकृति खपावे, तो दसमें गुणठाणे आवे,
 इहा सडलनो लोम हतो ते खपावीने, इग्यामु गुणठाणे
 उलागी ने धारमें गुणठाणे आवे । तिहा घणघातिया कर्म
 ज्ञानावरणी १, दर्शनावरणी २, अतराय ३, एतीन कर्म
 खपावीने तेरमें गुणठाणे आवे तिहा १० बोल नी प्राप्ती
 होवे, दान लब्दी १, लाभ लब्दी २, भोग लब्दी ३, उप
 भोग लब्दी ४, वीर्य लब्दी ५, केवलज्ञान लब्दी ६, केवल-
 दर्शन लब्दी ७, चायक समकित लब्दी ८, यथारथात
 चात्रि लब्दी ९, शुद्धध्यान लब्दी १०, एम १० बोल
 सहित १४ गुणठाणे आवे । इहा चारी अध्यात्मकर्म क्षय
 करीने निर्वाण जाय ॥ इति लक्षण द्वार सम्पूर्ण ॥ २१ ॥

॥ हवे स्थिती द्वार लिरयते ॥

पहिला गुणठाणानी स्थिती तीन प्रकारनी । अमवी
 आसरी अनादी अनत । मवी आसरी अनादी मान्त । पड-
 वाई समदृष्टि जाणवो तेहनी स्थिती जघन्य अन्तर सुहूर्त,
 उत्कृष्टी अर्ध पुद्गल देश उणी १, बीजा गुणठाणानी स्थिती
 जघन्य १ समय उत्कृष्टि ६ थावलिमानी स्थिती । श्रीब्रा

गुणठाणानी स्थिती जघन्य उत्कृष्टि अन्तर मुहूर्तनी । चौथा
 गुणठाणानी स्थिती जघन्य अन्तर मुहूर्त, उत्कृष्टी ३३
 मागतोऽम भाभेती । पाचमा, छट्ठा, तेरमा, गुणठाणानी
 स्थिती जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्टी १ क्रोडी पर्व देश
 उणी । सातमा गुणठाणासु माडीने इग्यारमा गुणठाणा
 सुधी । जघन्य एक ममय उत्कृष्टी अन्तर मुहूर्त, चारमा
 गुणठाणा नी स्थिती जघन्य उत्कृष्टी अन्तर मुहूर्तनी, चव-
 दमा गुणठाणानी स्थिती पाच लघु अक्षरनी । अ, इ, उ
 ऋ, लृ, । इति स्थिती द्वार सम्पूर्ण ॥ ३ ॥

॥ हवे क्रियाद्वार लिख्यते ॥

मूल क्रिया ५ मिथ्यात्पत्नी १ अप्रत्याख्यानी २ परि-
 क्रिया ३ आरभिया ४ मायाप्रतिया ५ पहिले गुणठाणे
 क्रिया पाच लागे । बीजे तीजे चौथे गुणठाणे क्रिया ४
 लागे मिथ्यात्प न लागे पाचमें गुणठाणे क्रिया ३ लागे
 अपच्यखाण नी न लागे । छट्ठे गुणठाणे क्रिया २ लागे
 परिद्रह न लागे । सातमा गुणठाणासु माडीने दसमागुण-
 ठाणा सुधी १ मायावतीया लागे । इग्यारमें चारमें तेरमें
 गुणठाणे १ इरियावहियानी क्रिया लागे । पहिले समय
 लागे । बीजे समय वेदे, तीजे समय निर्भरे चवदमें गुण-
 ठाणे क्रिया न लागे । इति क्रियाद्वार सपूर्ण ॥ ४ ॥

हवे सत्ताद्वार लिख्यते ।

पहिला गुणठाणासु माडीने इग्यारमा गुणठाणा सुधी
आठकर्म नीसत्ता वारमा गुणठाणे मात कर्मनी मत्ता मोहनी
नथी तेरमें चरदमें गुणठाणे ४ अघातिया कर्मनी सत्ता वेदनी
१, आयु २, नाम ३, गोत्र ४, इति सत्ताद्वार सपूर्ण ॥

॥ अथ वधद्वार लिख्यते ॥

पहिला गुणठाणा सु माडीने, श्रीजे गुणठाणो वरजी,
ने, सातमा गुणठाणासुधी आठ कर्म बाधे, तथा सात बाधे
तो आयु न बाधे श्रीजे आठमें नवमें गुणठाणे ७ कर्म बाधे,
आयु न बाधे, दसमें गुणठाणे ६ कर्म बाधे मोहनी न बाधे
इग्यारमें वारमें तेरमें गुणठाणे १ साता वेदनी बाधे
चरदमें गुणठाणे अघ । इति वध द्वार सपूर्ण ॥ ६ ॥

हवे उदेद्वार लिख्यते ।

पहिला गुणठाणाथी माडीने दसमा गुणठाणा सुधी
आठ कर्म नो उदे, इग्यारमें वारमें गुणठाणे सात कर्म नो
उदे मोहनी नथी, तेरमें चरदमें गुणठाणे चार अघात्या
कर्मनी उदे । इति उदे द्वार सपूर्ण ॥

हवे उदीरणाद्वार लिख्यते ।

पहिला गुणठाणा थी माडीने श्रीजे गुणठाणो वरबी,
छद्दा गुणठाणा सुधी आठ कर्म नी उदीरणा, अथवा सात

कर्म नी उदीरणां आयु वज्यो, त्रीजे गुणठाणे आठ कर्मनी उदीरणां सातमें आठमें नममें ६ कर्म नी उदीरणा, आयु, वेदनी, ए वेने वरजी, दसमें गुणठाणे ६ कर्मनी उदीरणा ॥ एहीज उदीरतो मोहनी वरजी इग्यारमें गुणठाणे ५ उदीरतो एहीज वारमें गुणठाणे ५ उदीरतो एहीज अथवा २ उदीरतो नाम १ गोत्र २ तेरमें गुणठाणे २ उदीरतो नाम गोत्र २ उदीरे नहीं । चवदमें गुणठाणे उदीरणा नहीं । इति उदीरणाद्वार सपूर्ण ।

॥ हवे निर्भरा द्वार लिख्यते ॥

पहिला गुणठाणासु माडीने दसमा गुणठाणा सुधी आठ कर्मनी निर्भरा इग्यारमें वारमें गुणठाण ७ कर्मनी निर्भरा मोहनी वरजी तेरमें चवदमें गुणठाणे ४ अघात्या कर्मनी निर्भरा । इति निर्भराद्वार सपूर्ण ॥

हवे भावद्वार लिख्यते ।

मूल भाव पाच उदइक १ उपसम २ त्रयोपसम ३ चायक ४ परिणामिक ५ हवे पहिले त्रीजे त्रीजे गुणठाणे भाव ३ लाभे उदइक १ उपसम २ त्रयोपसम ३ चौथागुण ठाणासु माडी इग्यारमा गुणठाणा सुधी भाव चार लाभे वारमें गुणठाणे भाव ४ लाभे । उपसम वरज्यो तेरमें चवदमें

गुणठाणे भाव ३ लाभे उदङ्क भाव १ चायक २ परिणामिक
मिद्ध में भाव २ लाभे । चायक १ परिणामिक २ । इति
भावद्वार सपूर्ण ॥

हवे कारणा द्वार लिख्यते ।

कारणा ५ मिथ्यात्व १ अत्रत २ प्रमाद ३ कषाय ४
अशुभजोग ५ पहिले गुणठाणे कारण ५ लागे । त्रीजे गुण-
ठाणे, बोजे गुणठाणे, चौथे गुणठाणे, चार कारणा लागे
मिथ्यात्व न रयो पांचमें छट्टे गुणठाणे कारण ३ लागे ।
अत्रत टल्यो सातमा गुणठाणासु मांडी दसमा गुणठाणा
सुधी कारण २ लागे । प्रमाद टल्यो । इग्यारमें चारमें तेरमें
गुणठाणे कारण १ जोग लागे । चत्रदमें गुणठाणे कारण
नथी । इति कारण द्वार सपूर्ण ।

॥ हवे परिसा द्वार लिख्यते ॥

क्षुधापरिसा १ पिवासा परिसा २ सीत परिसा ३ उष्ण
परिसा ४ डस परिसा ५ अचेल परिसा ६ रतिपरीसा ७
स्त्री परीसा ८ चरिया परीसा ९ नीमिया परिसा १० सक्ता
परीसा ११ अत्रोम परीसा १२ बध परीसा १३ जायणा
परीसा १४ अलाम परीसा १५ रोग परीसा १६ तणफासा
परीसा १७ मल परीसा १८ सत्कार परीसा १९ प्रज्ञान परीसा

२० अज्ञान परीसा २१ दर्शन परीसा २२ । चारित्र कर्म थकी परीसा उपजे ज्ञानावरणी कर्म ॥२२॥ परीसा उपजे ॥२०॥ ११-१३-१५-१७-१९॥२१॥ वेदनी कर्म थकी ॥११॥ परीसा उपजे १३-३-४-५-६ मोहनी कर्मथी ८ परीसा उपजे दर्शन मोहनीथी १ परीसा उपजे ॥२३॥ चारित्र मोहनीथी ७ परीसा उपजे ॥ ६-७-८-१०-१२-१४-१६ ॥ एव ७ ॥ अतराय कर्म थी १५ परीसा उपजे एव ४ कर्म थी २२ परीसा उपजे ॥ पहिला गुणठाणासु मांडीने नवमा गुणठाणा सुधी २२ परीसा उपजे । ते मांडी २० वेदे २ न वेदे सीत होवे तिहा उष्ण नहीं, उष्ण होवे तिहा सीत नहीं, ॥ १ ॥ चरिया होवे तिहा निमिया नथी निसिया होवे तिहा चरिया नथी दसम इग्यारमें चारमें गुणठाणा १४ परीसा उपजे ॥ इहा मोहनी ८ टल्या ते माहे १० वेदे सीत होवे तिहा उष्ण नहीं चरिया तिहां सभ्नाय नथी सभ्नाय तिहां चरिया नथी ॥ तेरमें चउदमें गुणठाणे परीसा ११ उपजे ज्ञानावरणी २ अतरायनो १ एव ३ वरजा ११ मांडी ६ वेदे २ न वेदे इति परीसा द्वार सपूर्ण ।

॥ हवे आत्माद्वार लिख्यते ॥

आत्मा ॥ ८ ॥ द्रव्य आत्मा १ कषाय २ जोग ३ अयोग ४ ज्ञान ५ दर्शन ६ चारित्र ७ वीर्य आत्मा ८ ।

पहिले व्रीजे गुणठाणे आत्मा ६ लाभे । ज्ञान चारित्र नयी ।
 वीजे गुणठाणे चौथे गुणठाणे ७ लाभे चारित्र नयी । ५
 गुणठाणामु मांडीने देशर्मा गुणठाणा सुधी अत्मा = इग्यार-
 म बारम तेरमें गुणठाणे ७ आत्मा लाभे । कपाय नयी । चउद
 में गुणठाणो आत्मा ६ लाभे जोग नयी सिद्ध मगर्वान में
 आत्मा ४ लाभे, अथवा ६ लाभे ॥ इति आत्मा द्वार संपूर्ण ॥

॥ हवे जीवना भेद द्वार लिख्यते ॥

जीवना भेद १४ पहिला गुणठाणा मां लाभे । एम
 यापत चवदमा गुणठाणा सुधी आप २ ना गुण आप २ माही
 लाभे । इति गुणठाणा द्वार संपूर्ण ॥

॥ हवे जोग द्वार लिख्यते ॥

जोग १५ । मनना ४ वचनना ४ कायना ७ एम १५
 पहिले वीजे चौथे गुणठाणे जोग १३ लाभे । अहारक, अहा-
 रकुमिथ्र ए २ ठाल्या, व्रीजे गुणठाणे १० जोग लाभे
 मनना ४ वचनना ४ कायाना २ औदारिक अनेवैक्रिय एम १०
 लाभे । पाच में गुणठाणे १२ जोग मनना ४ वचनना ४
 कायाना औदारिकनुमिथ्र वेद्रीयनुमिथ्र एम १२ छट्टे गुण-
 ठाणे जोग १४ लाभे १ कर्मण घरज्यो । सातमे गुणठाणा
 में जोग ११ तीन मिथ्र अने कर्मण ४ नयी । आठमा

गुणठाणा सु माडी तारमा गुणठाणा सुधी मनना ४ रचन
ना ४ कायाना १ एम ६ । तेरमें गुणठाणे जोग ७ मनना २
रचनना २ कायाना ३ एम ७ । चवदमें गुणठाणे जोग नथी
इति जोग द्वार सपूर्ण ॥

॥ हवे उपयोग द्वार लिख्यते ॥

उपयोग ॥ १२ ॥ ज्ञानना ५ अज्ञानना ३ दर्शन ४
एम १२ । पहिले त्रीजे गुणठाणे उपयोग ६ लाभे प्रज्ञान
३ दर्शन ३ एम ६ । बीजे, चौथे पात्रमें, अने टट्टे गुणठा-
णा सु मांडी १२ गुणठाणा सुत्री उपयोग ७ ज्ञानना ४
दर्शनना ३ । तेरमें चवदमें गुणठाणे उपयोग २ केवलज्ञान
१ ने केवलदर्शन २ एम मिदजीमें परा २ इति उपयोग
द्वार सपूर्ण ॥

॥ हवे लेश्या द्वार लिख्यते ॥

लेश्या ६ पहिला गुणठाणा सु माडी छट्टा गुणठाणा
सुधी ६ लेश्या कृष्ण १ नील (कापूत ३ तेज ४ पत्र ५
शुक्ल ६ लेश्या सातमें गुणठाणे लेश्या ३ तेजु १ पत्र २
शुक्ल ३ आठमा गुणठाणा सु माटी ने तेरमा गुणठाणा
सुधी १ शुक्ल लेश्या चवदमें गुणठाणे लेश्या नथी इति
लेश्या द्वार सपूर्ण ।

॥ हवे हेतुद्वार लिरयते ॥

हेतु ॥ ५७ ॥ मिथ्यात्त्र ५ अमीग्ररु अण्यमीग्ररु २
 माम ३ अमानिसेसीक ४ अणभोग ७ पाच अत्रत १२ छे-
 कायना ६ इद्री पाचना ५ मन १ सर्वं १२, एम १७ जोग
 १५, क्माय २५, सोले क्माय, नो नव क्माय मरु मिली
 हेतु ५७ । पहिले गुणठाणे हेतु ५५ लाभे आहारक १ आहा
 ररु मिश्र ए वे जोगटल्या । बीजे गुणठाणे हेतु ५० लाभे
 ५ मिथ्यात्त्र टल्या । बीजे गुणठाणे हेतु ४३ लाभे अनतानु
 वधी चोक्डी टली । औदारिकनो मिश्र १ वेक्रियनो मिश्र
 २ कर्मण ३ जोगटल्या । चौथे गुणठाणे हेतु ४६ लाभे
 ३ जोग पाठा आव्या । पाचमें गुणठाणे हेतु ३६ लाभे
 आप्रत्यारपानी चोक्डी टली । त्रमनी अत्रत टली, कर्मण
 जोग औदारिक मिश्र नोटल्या । छठे गुणठाणे हेतु २६ लाभे
 ११ अत्रतटल्या प्रत्यारपानी चोक्डी टली अहारक आहार
 नो मिश्र २ जोग पाठा आव्या सातमें गुणठाणे हेतु २४ लाभे
 । २ मिश्र जोग टल्या । आठमें गुणठाणे हेतु २२ लाभे
 आहारक १ वेनीय २ जोग टल्या । नवमें गुणठाणे हेतु १६
 लाभे । ६ हास्यादिक टल्या । दशमें गुणठाणे हेतु १०
 लाभे । सजलनो त्रोध १ मान २ माया ३ स्त्रीवेद ४ पुरुष-

वेद ५ नपुसकवेद ६ एव ६ टल्या । इग्यारमें चारमें गणठाणे हेतु ६ लाभे जोग संजलनो लोभ टल्यो । तेरमें गणठाणे हेतु ७ लाभे । ते जोग ७ । चप्रदमें गणठाणे ऊर्म वधनो हेतु नवी । इति हेतु द्वार सपूर्ण ॥

॥ हवे मार्गणा द्वार लिख्यते ॥

पहिला गणठाणे मार्गणा ४ पहिलानो तीजे चौथे पाचमें मातमें गुणठाणे आवे । १ तीजे गुणठाणे मार्गणा बीजानो पहिले गुणठाणे आवे २ । तीजे गुणठाणे मार्गणा ४ तीजानो पहिले चौथे पाचमें मातमें गुणठाणे आवे । तीमरा चौथे गणठाणे मार्गणा ५ चौथाना तीजे बीजे पहिले पाचमें सातमें गणठाणे आवे । ने जाय ४ । पांचमा गणठाणे मार्गणा ५ पाचनानु चौथे तीजे, बीजे, पहिले, मातमें गुणठाणे जाय ५ । छट्टे गणठाणे मार्गणा ६ छट्टाना ५-४ ३ २-१ सातमें गणठाणे जाय । छट्टे सातमें गुणठाणे मार्गणा ३ सातमानो ६-८-९-१० आवे । काल करतो चौथे गणठाणे जाय । आठमा गणठाणे मार्गणा ३ नरमें गणठाणे मार्गणा ८, दसमें गुणठाणे मार्गणा ४, दसमानो ९-११-१२ काल करे तो चौथे गुणठाणे आवे । इग्यारमा गुणठाणे मार्गणा ७ । ११ १० काल करे तो चौथे गुणठाणे आवे इग्यारमा चारमानो

तेरमे तेरमानो । चन्द्रमानो काल करे तो चाया गणठाण जाय इति मार्गणा द्वार सपूर्ण ।

हवे ध्यान द्वार लिख्यते ।

ध्यान ४ । प्रारत १ रोद्र २ उर्म ३ शुक्र ४ पहिले, वीजे त्रीजे, गुणठाणे ध्यान २ प्रारत, १ रुद्र २ । चौथे, पाचमें, गुणठाणे ध्यान ३ प्रारत १ रुद्र उर्म ३ छठे गुणठाणे ध्यान २ मातमा गुणठाणा मु माडीने चन्द्रमा गुणठाणा सुयी ध्यान १ पुत्रध्यान १ इति ध्यान द्वार सपूर्ण ।

हवे दडक द्वार लिख्यते ।

दडक २४ पहिले गुणठाणे दडक २४ लाभे । वीजे गुणठाणे दडक १६ लाभे । वाग्ना टल्या । त्रीजे, चौथेगुणठाणे दडक १६ लाभे ३ पिक्लेट्रीनाटल्या । पाचमें गुणठाणे दडक २ लाभे । मनुष्य १, तिर्यच २, छठ्या गुणठाणासु माडा चन्द्रमा गुणठाणा सुयी १ मनुष्यनो दडक १ । इति दडक द्वार सपूर्ण २१ ॥

हवे जीवा जोनी द्वार लिख्यते ।

पहिले गुणठाणे ८४००००० लाख जीवा जोनी लाभे त्रीजे गुणठाणे ३२००००० लाख लाभे । ७२ एक्केन्डीनी म्ही त्रीजे गुणठाणे, चौथे गुणठाणे २६००००० लाख

जीवायोनी लाभे । ६ विकलेंद्रीनी टली, पाचमा गुणठाणे
 १००००० जीवायोनी लाभे । ८ देवता नारकी टली ।
 छद्दा गुणठाणासु मांडी चवढर्मा गुणठाणासुधी १४०००००
 लाख मनुष्यनी जोनी लाभे । इति जीवाजोनी द्वार मपूर्ण ।

॥ हवे सतर द्वार लिख्यते ॥

सतर कहता आतरो पडतो पहिले गुणठाणे केटलो
 पड । जघन्य अन्तर मुहूर्तनो उत्कृष्टो ६६ सागरापम
 भाजेरो धीजा गुणठाणासु मांडी इग्यारमा गुणठाणा सुर्षी
 आतरो जघन्य अन्तरमुहूर्तनु, उत्कृष्टो अर्ध पुद्गल देशे उणो ।
 चारमें तेरमें छुटो ते छुटो फेर पाछो न आवे नीरतर कहता
 जटली अपाप गुणठाणानी स्थिती छे तेटला काल त्या रहे ।
 इति सतरद्वार मपूर्ण ।

॥ हवे अल्पावहुत्व द्वार लिख्यते ॥

सर्षी थोडा ग्यारमा गुणठाणानाधणी तेथी चारमे
 गुणठाणा गाला सरपात गुणा । तेथी आठमा, नवमा, दस
 माना धणी माहो माहें ममतुल्य । तेथी चारमा गुणठाणाना
 धणी विशेष अधिक । तेथी तेग्मा गुणठाणाना सरपाता
 गुणा । तेथी सातमा गुणठाणाना धणी मुख्यता गुणा ।
 तेथी छद्दा गुणठाणाना रणी मुख्यता गुणा । तेथी पाचमा
 गुणठाणाना धणी अमरपाता गुणा । तिर्यञ्च में मात्रग धणा

तेनाटे तेवी श्रीना, पीजा, गुणडागान धणी अन्त्याना
 गुणा । रिफोटीनी अपेवारी । तीना गुणडागाना घणी
 अन्त्याना गुणा । देरना नारहीनी अपवा र्था चाथा गुण
 टाणानाधणी अन्त्याना गुणा । स्थिता घणी । तेनाटे तर्था
 चरदमा गुणडागाना घणी अन्त गुणा मिदनी अपेवारी
 पहिला गुणडागाना घणी अन्त गुणा । निगाटीया बीव
 नी अपेवारी ॥ इति अल्पावहृत्य द्वार सम्पूर्ण ॥

॥ लघु संग्रहणीनो यंत्र ॥

(जत्रु डीप लाख जोजननो)

एक गाडवानु भरत क्षेत्र छे । ते मगत क्षेत्र केरहु छे
 तो के ५२६ जोजनने ६ कलानो छे । ५०० को १०० म
 गुणाकन्यो तो ५०००० हजार थया, ५०० को ६० मं
 गुणाकन्यो तो ४५००० हजार थया, २५ जानन को १००
 से गुणाकन्यो तो २५०० थया, २५ जोजन को ९० से
 गुणाकन्यो तो २२५० थया, १ जोजन को १०० से गुणा
 कन्यो तो १०० थया, १ जोजन को ६० गुणाकन्यो तो
 ६० थया, ६ कला को १०० गुणाकन्यो तो ६०० थया,
 ६ कला को ६० गुणाकन्या तो ५४० थया, १६ कलानु
 एक जोजन ६५ कलाना ५ जोजन थया, ६०० कलाना

३० जोजन थया, अने ३० कला वधी ५०० कलाना २५
नाजन थया, अने २५ कला वधी ३० कला २५ कला ४०
कला सर्वे भेगी करी त्यारे ६५ कला यई, तेना ५ जोजन
थया, मर्ममलीने ६० जोजन थया मर्वेनो आख भेगोफगना
नास जोननना जजुद्रीप थयो

१६० साडवा पेला पामाना ६३ खाडवा

१ साडवानु भरत क्षेत्र

२ साडवानु हिमवत पर्वत

४ साडवानु हिमवत क्षेत्र

= साडवानु महा हिमवत पर्वत

१६ खाडवानु हरण्य क्षेत्र

३२ खाडवानु निपथ पर्वत ए मर्म मलीन ६३

खाडवा थया

॥ वीजा पामाना ॥

१ साडवानु ऐरावत क्षेत्र

२ साडवानु शिखरी पर्वत

४ साडवानु हरण्यवत क्षेत्र

= साडवानु रुपी पर्वत

१६ साडवानु गम्यरु क्षेत्र

३२ नीलवत पर्वत ए वे ६३ साडवा वाशावा -

६४ खांडवानु महाविदेह क्षेत्र ए सर्व भेगा करता १६०

खांडवा थया

३ लाख १६ हजार २२७ जोजन ३ कोम १२८ वनुप १३॥

अगुलनो गुणा कराना

३ लाखने १०० से गुणाक्यो तो ३ क्रोड थया, ३ क्रोडने

१० गुणाक्यो ३० क्रोड थया.

३० क्रोडने २५ से गुणाक्यो तो ७५० क्रोड थया

१६ हजार १०० मे गुणाक्योतो १६ लाख थया

१६ लाखने १० से गुणाक्योतो १ क्रोडने ६० लाख थया

१ क्रोडने २५ से गुणाक्योतो २५ क्रोड थया

६० लाखने २५ से गुणाक्योतो १५ क्रोड थया

२ सौने १०० से गुणाक्योतो २० हजार थया

२० हजार १० से गुणाक्योतो २ लाख थया

२ लाखने २५ से गुणाक्योतो ५० लाख थया

२७ सौने १० से गुणाक्योतो २७०० मौ थया

२७ सौने १० से गुणाक्योतो २७ हजार थया

२७ हजारने २५ से गुणाक्योतो ६७५००० थया

३ कोसने १०० से गुणाक्योतो ३ सौ कोस थया

तेना ७५ जोजन थया

७५ जोजनने १० से गुणाक्योतो ७५० जोजन थया

- ७५० जोजनने २५ से गुणाकृत्योतो १८७५० जोजन तथा
 २८ धनुष ने १०० से गुणाकृत्योतो २८ मौं तथा,
 २८ मौं धनुषने १० गुणाकृत्योतो २८ हजार धनुष तथा
 २ हजार धनुषनो एक कोम थाय अने चार कोसनो एक
 जोजन थाय, २८ हजार धनुष नो ३॥ जोजन तथा
 ३॥ जोजनने २५ मे गुणाकृत्योतो ८७॥ जोजन तथा
 १०० धनुषने १०० से गुणाकृत्योतो १० हजार तथा
 दस हजारनां ५ कोम तथा
 ५ कोमने १० मे गुणाकृत्योतो ५० कोम तथा तेना
 जोजन १२॥ तथा
 १२॥ जोजन ने २५ से गुणाकृत्योतो ३१२॥ जोजन तथा
 १३॥ अगुलने १०० मे गुणाकृत्योतो १३५० अंगुल तथा
 १३५० अगुलने १० मु गुणाकृत्योतो १३५०० अगुल तथा
 १३५०० अगुलनां १४० धनुष अने ६० अगुल तथा
 १४० अगुलने २५ से गुणाकृत्योतो ३५०० धनुष तथा
 दो हजार धनुष नो एक कोस अने पन्तरसौ धनुष तथा
 ६० अंगुलने २५ से गुणाकृत्योतो १५०० अगुल तथा
 ६६ अगुलनो एक धनुष १५०० अगुलना १५ धनुषने ६०
 अगुल तथा, सर्वनो आकडो मेगा कृत्यो तो ७००

क्रोड ५६ लारा ६४ हजार १५० जोजन १ मोस
१५१५ धनुष अने ६० अगुल यया नानी मधरणी
नो गणी पद इति ममास ॥

॥ हवे पर्वत ॥

३८ चैतात्य पर्वत तेमा चार वाटला आकारे । ३४
लांबाछे । १६ घलारा पर्वत छे । एक चित्र अने बीजो विचीत्र
एक जमग, अने बीजो ममग, वे पर्वत छे २०० कउन गिरीछे ।
गजदता पर्वत तेमा १ सुमेरु ६ वर्षधर पर्वत छे, ए सर्व
इकट्टा करता २६७ ययाछे

॥ हवे कुटनी गिनती ॥

१६ घलारा पर्वतने विशेषे चार २ कुट एकदर ६४ कुट
थया मोमनम अने गध मादन तेने विशेषे मात २ कुट अन
रूपी तया महा हीमवत पर्वत ए वे पर्वत ने विशेषे । आठ २
कुट मर्वे मलीने ६४ थया । ३४ चैतात्य पर्वत ए वे पर्वत
विधुत पर्वत, निपेथ पर्वत, नीलवतपर्वत । मालगिरी पर्वत
छरगिरी पर्वत, ए ३९ पर्वत ने विशेषे नर, २ कुट मर्वे मली
३५१ थया

हीमवतपर्वत अने शिखरीपर्वत ए च पर्वत ने विशेषे
म्याग २ कुट सर्वनी आंक मेगो करता ४६७ कुट थया.

विजयने विशेष ३४ रिशम कुट छे । तथा मरुपर्यंत,
बसुवृच अने देवकुरु चोत्र ए जणने- विशेष आठ २ कुट
सालिवृच मध्येना हरिकुट अने हरीशो कुट ए सर्वे मलीने ६०
सुमिकुट थया

॥ हवे १०२ तीर्थ लिख्यते ॥

मागद तीर्थ, गन्धाम तीर्थ, प्रभाम तीर्थ ए तीन तीर्थ
३२ विजय तथा भरत ऐरावत ए ३४ ने विशेष तीन २
होय सर्व मलीने १०२ तीर्थ थया

॥ हवे १३६ श्रेणी लिख्यते ॥

विद्याधर अने अयोगी देवतानी ३४ वैताड्य पर्यंत
ने विशेष चार २ श्रेणी छे ३४ ने चार सु गुणा करतां १३६
श्रेणी थाय

॥ हवे नदियो १४५६०००० लिखिये छे ॥

गंगा, सिंधु, रक्ता, ने रक्तवती ए चार नदियो ने
विशेष प्रत्येके २ चौद २ हजार नदियोना परिवार छे । सर्वे
मलीने ५६००० नदियो थयी । हीमबंत अने ऐरावत ए च
चोत्रनी रोहिता, रोहीतामा, रूपक्ला, रुमार्णक्ला ए चार
नदियोने प्रत्येक २ अष्टौवीम २ नदियोना परिवार छे । हरि
वर्ष, रम्यरु, चोत्रनी हरीकता, हरीशलीला, नरकता ए चार

नदियोने प्रत्येक २ छप्पन २ हजार नदियो ना परिवार छे । देवकुरुने, उचरकुरुमा ६ द्रह तेना नाम पद्म, महापद्म, पुण्डरीक महापुण्डरीक, तीगीरछ अने केमरी ए ६ द्रहनी ६ नदियोने विशे चौद २ हजारनो परिवार मर्ये थइने ८४००० थई परिचम महाविदेहनी सोल बीजय तेमा बरी मनदियो तेने प्रत्येक २ चौदे २ हजारनो परिवार मर्ये चार लाख ४८ हजार नदियो थई । सर्व नो आंक भेगो करता सीता नदिमा पांच लाखने बारीव हजार नदियो थई । अने सीतादा नदीमा पांचलाखने बारीमहजार नदियोनो परिवार मर्ये नदियोनो परिवार भेगो करता चौदेलालाख ने ५६ हजार नदियो थई

बासठ मार्गणाए ५६३ भेद जीवना लखियेउ

१६८ देवता नी गति १५ परमाधामीना, १० भुवन-पतिना, १६ वाणव्यतरना १० तिर्यगज्ज भकना, १० जोती-पीना, १२ देवलोकना, ३ म्निवीपीया ना, ९ लोकातिक ना, १२ नवग्रैवेग ना, ५ अनुत्तर निमाना, एकठा ६६ पर्याप्ता, ६६ अपर्याप्ता मिलाकर १६८ भेद थया

३०३ मनुष्यनी गति १५ कर्मज भूमि तेएम ५ भरत ५ ऐंगवत, ५ महाविदेह, मिलाकर १५ भेद । ३० अकर्मज भूमि ते एम ५ हेमवत, ५ ऐरण्यवत, ५ हरिवर्ष, ५ रम्यक,

५ देवकुरु, ५ उत्तरकुरु, मिलकर ३० भेद । ५६ अतगद्विष
मिलकर १०१ पर्याप्ता, १०१ अपर्याप्ता, १०१ समुद्धिम
मिलकर ३०३ भेद.

४८ तिर्यचनी गति २२ एकेंद्रीना ६ त्रिकुण्डलीना २०
पंचेंद्री तिर्यचना एम ४८ भेद

१४ नरकनी गति ७ नारकी पर्याप्ती ७ अपर्याप्ती एम
१४ भेद.

२२ एकेंद्रीनी मार्गणा ए ४ पृथ्वीकाय ४ अपर्याय ४
तैजसाय ४ वातकाय ६ वनस्पतिकाय एम २२ भेद
वेंद्री मार्गणा ए १ पर्याप्ता १ अपर्याप्ता एम २ भेद.

२ वेंद्री मार्गणा ए १ पर्याप्ता १ अपर्याप्ता एम २ भेद

२ तेंद्रीनी मार्गणा ए १ पर्याप्ता १ अपर्याप्ता एम २ भेद

२ चौरेंद्रीनी मार्गणा ए १ पर्याप्ता १ अपर्याप्ता
एम २ भेद

५३५ पंचेंद्रीनी मार्गणा ए १६८ देवताना ३०
मनुष्यना

२० तिर्यच पंचेंद्रीना १४ नारकीना एम ५३५ भेद
४ पृथ्वी कायनी मार्गणा एम १ सुक्ष्म १ वादर २
पर्याप्ता २ अपर्याप्ता मिलकर ४ भेद

४ अपर्यापनी मार्गणा एम सुक्ष्म १ वादर २
पर्याप्ता २ अपर्याप्ता मिलकर ४ भेद

४ तेजकायनी मार्गणा एम १ सुक्ष्म १ चादर २ पर्याप्ता २ अपर्याप्ता मिलकर ४ भेद

४ वाउफायनी मार्गणा एम १ सुक्ष्म १ चादर २ पर्याप्ता २ अपर्याप्ता मिलकर ४ भेद

६ वनस्पतिनी मार्गणा एम २ प्रत्येक वनस्पति काय १ पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ भेद

४ साधारण वनस्पति काय त एम १ सुक्ष्म १ चादर पर्याप्ता २ अपर्याप्ता मिलकर ४ भेद

५४१ त्रमफायनी मार्गणा एम १९८ देवताना ३०३ मनुष्यना २० तिर्यंच पचेंद्री १४ नारकीना ६ त्रिगलेंद्रीना एम मिलकर ५४१ भेद

०१२ मनयोगनी मार्गणा एम ६६ देवताना पर्याप्ता १०१ मनुष्यना पर्याप्ता ५ तिर्यंच पचेंद्रीना पर्याप्ता ७ नारकीना पर्याप्ता मिलकर ०१२ भेद

०२० वचन योगनी मार्गणा एम क्रि ०१२ मनयो गवाला थने ५ तिर्यंच पचेंद्री श्रमनीना पर्याप्ता ३ त्रिगलेंद्रीना पर्याप्ता एम ०२० भेद.

५६३ काया योगनी मार्गणा ए सर्व याने ५६३ भेद

४१० पुरुष वेदनी मार्गणा एम १९८ देवताना २ मनुष्यना पर्याप्ता १०१ अपर्याप्ता १०१ मिलकर २०

१० तिर्यंच पचद्वीना गर्भज पर्याप्ता अपर्याप्ता १० भेद सप्त
सप्त मिलकर ४१० भेद

३४० स्त्रियों वेदनी मार्गणा एम १२८ देवताना १५
परमाधार्मिना १० भुवनपतिना १६ वाखव्यतरना १० ति-
र्यंगजमरुना १० ज्योतिषीना १ किलिपियाना २ देवलोक
ना एम ६४ पर्याप्ता ६४ अपर्याप्ता मिलकर १२८ भेद २००
गर्भज मनुष्यना १० गर्भज तिर्यंच पचेन्द्री ना एम ३४० भेद

१९३ नष्ट मरु वेदनी मार्गणा एम १४ नारकीना ४८
तिर्यंचपचेन्द्रीना १०१ समुष्टिम मनुष्यना ३० कर्मभूमिना
पर्याप्ता अपर्याप्ता मिलकर १६३ भेद

५६३ क्रोधनी मार्गणा ए ५६३ भेद.

५६३ माननी मार्गणा ए ५६३ भेद

५६३ मायानी मार्गणा ए ५६३ भेद

५६३ लोभनी मार्गणा ए ५६३ भेद

४२३ मतिज्ञाननी मार्गणा ए १३ नारकीना सातमी
नररुना अपर्याप्ता चिना १० तिर्यंच गर्भज पर्याप्ता अने अ-
पर्याप्ता एम १० भेद २०२ मनुष्य गर्भन पर्याप्ता अने अ-
पर्याप्ता एम २०२ भेद देवताना १६८ भेद

४२३ श्रुतज्ञाननी मार्गणा ए १३ नारकीना १०
तिर्यंचना २०० मनुष्यना १६८ देवताना सर्व ४०३ भेद

२४६ अग्रविज्ञान मार्गणा ए १३ नारकीना ५ तिर्य-
च गर्भज पर्याप्ताना १९८ देवताना ३० मनुष्य गर्भजना
कर्म भूमिना १५ पर्याप्ता १५ अपर्याप्ता एम ३०

१५ मनपर्यवज्ञान मार्गणा ए १५ मनुष्यगर्भजना
कर्मभूमिना पर्याप्ता

१५ वैश्वज्ञाननी मार्गणा ए १५ गर्भजमनुष्य कर्म
भूमिना पर्याप्ता

५३५ मतिज्ञान मार्गणा ए १४ नरकना, ४८ तिर्य-
चना ३०३ मनुष्यना १७० देवताना एम ६ लोकातिकना
५ अनुचर विमाणना ए १४ पर्याप्ता अने अपर्याप्ता मिलर
२८ पिना १७० भेद लीना

५३५ श्रुतज्ञान मार्गणा ए मति अज्ञाननी परे जाणना
२२४ विभग अज्ञान मार्गणा ए १४ नरकना १०
तिर्यचना ३० मनुष्यना १५ कर्म भूमिना पर्याप्ता अने
अपर्याप्ता १७० देवताना ६ लोकानिम्ना ५ अनुचरवि
माग १४ पर्याप्ता १४ अपर्याप्ता मिलर २८ पिना
१७० भेद

१५ सामाह्य चारित्रने १५ कर्म भूमिना पर्याप्ता
१० छेदोपस्थापनिक चारित्रने १० मनुष्य ५ भरत
५ षण्णवत एम १० भेद

१० परीहारविशुध चारित्रने १० मनुष्यना उपर
परमाने

१५ सुद्धमपराय चारित्रना १५ कर्मभूमि मनुष्यना.

१५ यथाग्यात चाग्रिना १५ मनुष्य कर्म भूमिना

२० देशप्रिती चारित्रना १५ कर्म भूमिना मनुष्य

५ तिर्यच गर्मज पर्याप्ताना २० भेद

५६३ अविरति चारित्रना

२१८ चतु दर्शन मार्गणा ए ७ नारकीना पर्याप्ता ११

तिर्यचना ५ सज्ञी पंचेद्री पर्याप्ताना ५ अमज्ञी गंचेद्रीना प-

र्याप्ता १ चउरीद्री पर्याप्ताना १०१ मनुष्य गर्मज पर्याप्ताना

१९ देवताना पर्याप्ताना एरुदर मिलरुद २१८ भेद.

५६३ अचतु दर्शन मार्गणाने त्रिपे.

२४६ अवधि दर्शन मार्गणा ए अधिज्ञाननी परे

जावणो.

१५ केवलदर्शन मार्गणा ए कर्मभूमिनामनुष्य ४५६

कृष्ण लेश्यानीमार्गणाए ६ नारकीना १ पाचमी १ छट्टी १

सातमी एम ३ नरकना पर्याप्ता अने ३ अपर्याप्ताना एम ६

भेद ४८ तिर्यचना, ३०३ मनुष्यना, १०२ देवताना, १५

परमाधामी १० भुवनपतिना १६ वाणव्यतरना १० तिर्यग-

ज भरुना ५१ पर्याप्ता अने अपर्याप्ता मिलरुद १०२ भेद.

४५६ नीलेश्या ए ६ नारकीना त्रीजी १ चौथी १ पाचमी १ एम ३ नरक पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ६ भेद ४८ तिर्यचना ३०३ मनुष्यना १०२ देवताना कृष्ण लेश्यानी परे

४५९ कापोत लेश्या नी मार्गणा ए ६ नारकी ना १ पहिली १ बीजी १ त्रीजी एम ३ नारकी पर्याप्ता, अपर्याप्ता ६ भेद ४८ तिर्यचना, ३०३ मनुष्यना, १०२ देवताना कृष्णलेश्यानी परे जानवा

३१३ तज्जलेश्यानी मार्गणा ए १३ तिर्यचना १० गर्भज तिर्यपचर्याप्ता अने अपर्याप्ता ३ पृथ्वीकाय १ अपर्याप्त १ वनस्पति एम मिलकर १३ मनुष्य गर्भजना २०२ पर्याप्ता अने अपर्याप्ता, ९८ देवताना १० भुवन पति १६ वाणव्यतर १० तिर्यंगज भक्र १० जोतिपी १ किल्विपीयानो २ देवलोक एकदर ४९ पर्याप्ता अने ४६ अपर्याप्ता ६८ भेद

६६ पद्मलेश्यानी मार्गणा ए १० तिर्यचना गर्भज पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ३० मनुष्यना १५ कर्मजभूमिना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता २६ देवताना त्रीजो, चौथु, पाचमु ३ त्रिविपीयानो अने ६ लोकातिक एम १३ पर्याप्ता अने १३ अपर्याप्ता एम २६ भेद

८४ शुक्रलेश्यानी मार्गणा ए १० तिर्यचना ३० मनुष्यना ४४ देवताना १ छट्टो १ मातमु १ आठमु १ नवमु

१ दशम १ ग्यारमु १ नारमु देवलोकना १ किल्लीपियानो
 ६ नवग्रैवेग ५ अनुत्तरविमाण एम २० पर्याप्ता अने २२
 अपर्याप्ता मिलकर ४४ भेद.

५६३ भव्यनी मार्गणा ए सर्व ५६३ भेद

५०५ अभव्यनी मार्गणा ए १५ परमाधामीना ६

लोकातिकना ५ अनुत्तरविमाणना एम २९ पर्याप्ता अपर्या-
 प्ता ५८ विना ५ ५ अने ६ लोकातिकना ५ अनुत्तर
 विमाणना एम १४ पर्याप्ता अने अपर्याप्ता २८ भेद सर्व
 ने गणिये तो ५३५ भेद.

२०३ उपममसमक्रिती मार्गणा ए ७ नारकीना पर्या
 प्ताना ५ तिर्यचना गर्भज पर्याप्ताना १०१ मनुष्यना गर्भज
 पर्याप्ताना ६० देवताना ६ लोकातिक विना पर्याप्ताना
 सर्वार्थमिद्धिनो १ नगणी ए तो २०२ भेद

१६८ साइक समक्रिती मार्गणा ए ६ नारकीना प
 हिला, ग्रीजी, त्रीजी, एम ३ पर्याप्ता ३ अपर्याप्ता ६ नारकी
 ना २ तिर्यचना थलचर पर्याप्ता अने अपर्याप्ता २ भेद

६० मनुष्यना १५ कर्मभुमिना पर्याप्ता अने ३० अ
 कर्मभुमिना एम ४५ पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ९० भेद.

७० देवताना १२ देवलोक ६ लोकातिक ९ नवग्रैवे-
 क ५ अनुत्तर विमाणना एम ३५ पर्याप्ता अपर्याप्तो ७० भेद

४२३ गयोपसप्तसमकृता मार्गणा ए १३ नारकीना
१० निर्यचना २०२ मनुष्यना १९८ देवताना.

१९८ मिश्रसमकृता मार्गणा ७ नारकीना पर्याप्ता
८५ देवताना ९ लोकातिक ५ अनुत्तर विमाण एम १४
पर्याप्ताना विना ८५ देवताना ५ तिर्यच पंचेद्री पर्याप्ताना
१०१ मनुष्यना गर्भज पर्याप्ताना

४०० सास्त्रादन समकृता मार्गणा ए ७ नरकना
पर्याप्ताना २१ तिर्यच गतिना ३ एकेंद्री अपर्याप्ताना १ पृ-
थ्वीकाय १ अपकाय १ वनस्पतिनाय ३ पर्याप्ता ३ विगलेंद्री
अपर्याप्ताना ५ असन्नी अपर्याप्ताना १० सन्नी अपर्याप्ताना
पर्याप्ताना २०२ मनुष्य गतिना गर्भज पर्याप्ता अपर्याप्ताना
१७० देवताना ९ लोकातिकना ५ अनुत्तर विना विमाणना
एम १४ पर्याप्ता १४ अपर्याप्ता २८ अने १७० देवताना

५३५ मिथ्यात्तनी मार्गणा ए ५६३ माहेयी ६ लोका-
तिकना ५ अनुत्तर विमाणना एम १४ पर्याप्ता १४ अपर्या-
प्ता २८ विना ५३५ भेद

४२४ सनीनी मार्गणा ए ५६३ माथी २२ एकेंद्रीना
६ विगलेंद्रीना १० असन्नी तिर्यच पंचेद्रीना एम ३८ समु-
ल्लिम १०१ मनुष्यना एम १३६ विना ४२४ भेद ।

१३६ असचीनी मार्गणा ए २२ एकेंद्रीना ६ विगलें-
द्रीना १० तिर्यच पंचद्री समुच्छिमना १०१ मनुष्य समुच्छि-
मना एम १३६ भेद

५६३ आहारनी मार्गणा ए सर्व

३४७ अणाहीरानी मार्गणा ए ७ नारकीना अपयोप्ता
ना २४ तिर्यचना सर्व अपर्याप्ताना २१७ मनुष्यना एम
१०१ समुच्छिमना १०१ गर्भज अपर्याप्ता १५ कर्मभूमिना
पर्याप्ता एम २१७ भेद ९९ देवताना अपर्याप्ताना एम सर्व
३४७ भेद.



द्वसयोगी भागा		त्रिमयोगी भागा ।		
१ उपसम	क्षायक	११ उपसम	क्षायक	क्षोपसम
२ उपसम	क्षोपसम	१२ उपसम	क्षायक	उदीक
३ उपसम	उदीक	१३ उपसम	क्षायक	परिणामिक
उपसम	परिणामिक	१४ उपसम	क्षोपसम	उदीक
५ क्षायक	क्षोपसम	१५ उपसम	क्षोपसम	परिणामिक
६ क्षायक	उदीक	१६ उपसम	उदीक	परिणामिक
७ क्षायक	परिणामिक	१७ क्षायक	क्षोपसम	उदीक
८ क्षोपसम	उदीक	१८ क्षायक	क्षोपसम	परिणामिक
९ क्षोपसम	परिणामिक	१९ क्षायक	उदीक	परिणामिक
१० उदीक	परिणामिक	२० क्षोपसम	उदीक	परिणामिक

चतुर्थ सयोगी भागा

२१ उपसम	क्षायक	क्षोपसम	उदीक
२२ उपसम	क्षायक	क्षोपसम	परिणामिक
२३ उपसम	क्षायक	उदीक	परिणामिक
२४ उपसम	क्षोपसम	उदीक	परिणामिक
२५ क्षायक	क्षोपसम	उदीक	परिणामिक

पञ्च मयोगी भांगा

१६ उपसम	क्षायक	क्षोपसम	उदीक	परिणामिकमव २६
---------	--------	---------	------	---------------

वाठस मार्गना ऊपर त्रेपन भाव

मागणा	उपसम	क्षयक	क्षयकउपसम	उदीरत	परिणामिक	सर्वभाव
६२	२	६	१८	२१	३	५३
१ देवगनी	१	१	१५	१७	३	३७
२मानवगती	२	६	१८	१८	३	५०
३तियंचगतो	१	१	१६	१८	३	३६
४नरकगती	१	१	१५	१३	३	३३
५एकेंद्रीजाति	०	०	८	१४	३	२५
६बेंद्रीयजाति	०	०	८	१३	३	२४
७नेंद्रीजाति	०	०	८	१३	३	२४
८चोरीद्रीजाति	०	०	६	१३	३	२५
९पचेंद्रीजाति	२	६	१८	२१	३	५३

३१ श्रुतज्ञान ०	०	१०	२१	३	३४
३३ विभाग ,, ०	०	१०	२१	३	३४
३४ सामायक- २	१	१४	१५	२	३४
चारित्र्य					
३५ छेदोपस्थानी २	१	१४	१५	२	३४
३६ परिहार- १	१	१४	१४	२	३२
विशुद्धी					
३७ सुदमसपराय २	१	१३	४	२	२२
३८ ययाख्यात २	६	१२	३	२	२८
३९ देशविरति १	१	१३	१७	३	३५
४० असयम १	१	१५	२१	३	४१
४१ चक्षुदर्शन २	२	१८	२१	३	४६
४२ अचक्षुदर्शन २	२	१८	२१	३	४६
४३ अवधिदर्शन २	२	१५	१६	२	४०
४४ केवलदर्शन ०	६	०	३	१	१३
४५ कृष्णलेश्या १	१	१८	१६	३	३६
४६ निललेश्या १	१	१८	१६	३	३६
४७ कापोत ,, १	१	१८	१६	३	३६
४८ तेजोलेश्या १	१	१८	१५	३	३८
४९ पचलेश्या १	१	१८	१५	३	३८
५० शुक्ललेश्या २	६	१८	१५	३	४७
५१ मन्व्य २	६	१८	२१	२	५२
५२ अभन्व्य ०	०	१०	२१	२	३३
५३ क्षायकउप ०	०	१५	१६	२	३६
५४ उपसमिक् २	०	१४	१६	२	३
५५ क्षायक	६	१४	१२		

५६ मिश्रसम	०	०	१४	१६	२	३५
५७ मिथ्यासम	०	०	१०	२१	३	३४
५८ सास्वादन	०	०	१०	२०	२	३२
५९ सज्ञी	०	६	१८	२१	३	५३
६० असज्ञी	०	०	६	१५	३	२७
६१ आहारक	२	६	१८	२१	३	५३
६२ अणहारक	१	६	१५	२१	३	४६
६३ मिथ्यात्व	०	०	१०	२१	३	३
गुणठाणा						
६४ सास्वादन	०	०	१०	२०	३	३३
६५ मिश्र	०	०	१२	१६	२	३३
६६ अविरति	१	१	१२	१६	२	३५
६७ देशविरती	१	१	१३	१७	२	३४
६८ प्रमथ	१	१	१४	१५	२	३३
६९ अप्रमथ	१	१	१४	१२	२	३०
७० अप्रवृत्तरण	१	१	१३	१०	२	२७
७१ अनिवृत्ति	२	१	१३	१०	२	२८
७२ सुक्ष्मसपराय	२	१	१३	४	२	२२
७३ उपशातमोहर	१	१	१२	३	४	२०
७४ स्त्रीणमोह	०	२	१२	३	२	२०
७५ सयोगी	०	६	०	३	१	१३
७६ अयोगी	०	६	०	२	१	१२

पाचसो क्षेत्र^{६३} जीवना भेद द्विप क्षेत्र आसरी

नकना तिर्यचना क्षेत्र १४ भेद ४८ भेद	मनुष्यना ३०३ भेद	देवताना सवसख्या १६८ भेद ५६३
१ भरत मे ० ४८	३ कमभूमि	० ५१
२ एरावत मे ० ४८	३	० ५१
३ महाविदेहमे ० ४८	३	० ५१
४ जपुद्विप मे ० ४८	२७ कु ३ क ग प अ स ६ प अ स	० ७५
५ लवणसमुद्र मे ० ४८	१६८ ७६ अतरद्वीप प अ स	० २१६
६ घातकीखड मे ० ४८	५४ कु ६ क ग प अ स १८ प अ स	० १०२
७ कालोदधिसमु ० ४८	०	० ४८
८ आघोपुष्करा वस्त द्विप मे ० ४८	५४ कु ६ क ग प अ स १८ प अ स	० १०२
९ नदीश्वरद्विप प्रमुख मे ०	४६ वादर तेरवायटली	० ४६

क्षेत्र	नरना	तिथचना	मनुष्या	देवताना	सवस
	१४ भेद	४८ भेद	३०३ भेद	१६८ भेद	५६३
१०	तिर्धानिक म०	४८	३०३	७२ दे १६ व्य १० ज्यो १० प्रीयक प अ	४२३
११	अधलोक मे	१४ ४८	३ उडाविजे सनीनो	५० कु १५ प ११५ प अ छे १० सु प अ	
१२	उधलोक म०	६६ धलचर व नथी	७६ देव १२ दे० ३ कि, ६ अ ६ सो प अ ५ अनुत्तरविमान	१२२	
१३	मेरुगिरपवत०	४८	०	०	४८
१४	असाईद्विप मे०	४८	३०३	०	३५१
१५	वार दवलोक मे०	२० तेजवाय टाली	४८ दे १२ दे ६ सो ३ कि प अ	६८	
१६	नव प्रेविक म०	१४ कु ५ सु प अ २ वाउ प अ	वाद प अ २ पृथवी १८८६ अ प अ	३२	

क्षेत्र	नवना	तिर्यंचना	मनुष्यना	देवताना	सवम
	१४ भेद	४८ भेद	३०२ भेद	१६८ भेद	५६३
१) लावनेछेड	१० ती	१० सु	प अ	०	१२
	२ वा	प अ	पृथ्वी	०	
२) आधा गाव म	०	६८	३	०	५१
३) मुट्टी मे	०	८	०	०	४
४) नदीश्वरसमुद्र		४६			
५) प्रमुख मे	०	तेज गदर टाली	०	०	४६

मसा आगना युगलिमानु ३ पत्योपमनु आयुष्य ३ कोसनु शरीर नाथे दिवसे तुवर प्रमाण अहार करे ५५६ पासली ४६ दिवस प्रति पानगाकरे त्रोजे आरे २ पत्योपमनु आयुष्य २ कोमनु शरीर त्रोजे दिवस त्रोजे प्रमाणे अहार कर १०७ पासती ६६ दिवस प्रतिपालणा करे ।

त्रीजा आराना युगनियानु एउ पत्योपमनु आयुष्य १ कोमनु शरीर एकातरे आमना जेटलोअहार करे ६४ पासती ७६ दिवस प्रतिपालणाकरे

२१	भरतक्षेत्र १४ घण्टा	७ गध कालना ६ भेद	१३०	५१७
	यो	टाल्या माथी १ टाल्यो		
२२	जबुद्विप १६ घण्टा	७ लघ कालना ६ भेद	५३०	२५७
	टाल्यो	टाल्यो माथी १ टाल्यो		

अजीवना घमास्ति काय आकास्ति कालास्ति वा पुदगलास्ति सवस
भेद ५६० अघर्मास्ति १६ काय ८ य ६ काय ५३० ५६०

लवणा ७ स्वघ कालना ६ भद्र
२३ समुद्र १४ स्वघटाल्यो ७ टाल्यो मायी १ टाल्यो ५३० ५५७

नदीश्वर ७ स्वघ
२४ द्विप १४ स्वघटाल्यो ७ टाल्यो ० ५३० ५५१

जीवना चउदा भेद ऊपर गुणठाणा, योग, उपयोग,
लेख्या, वघ, उदय, उदीरण, सत्ता

जीवना १४ भेद	गुण	योग	उपयोग	सत्या	वघ	उदे	उदीरतो	सत्ता
१४ सनीपचंद्री पर्याप्ता	१८	११	१२	६	७८	८७	४८	७८२
					६१	४	६५२	०
१३ सनीपचंद्री अ प	३	३	८	६	७८	८	७८	८
१२ असनीपचंद्री पर्याप्ता	१	२	४	३	७८	८	७८	८
११ असनीपचंद्री अ प	२	२३	३	३	७८	८	७८	८
१० चौरीद्री पर्याप्ता	१	२	३	३	७८	८	७८	८
९ चौरीद्री अ प	२	२३	३	३	७८	८	७८	८
८ तंद्री प	१	२	३	३	७८	८	७८	८
७ तंद्री अ प	२	२३	३	३	७८	८	७८	८
६ वंद्री प	१	२	३	३	७८	८	७८	८
५ वंद्री अ प	२	२३	३	३	७८	८	७८	८
४ वादर एकद्री प	१	३	३	३	७८	८	७८	८
३ वादर एकद्री अ प	२	२३	३	४	७८	८	७८	८
२ सुक्षम एकद्री प	१	१	२	२	७८	८	७८	८
सुक्षम एकद्री अ प	१	२३	३	३	७८	८	७८	८

शेस कूट नी गीनती.

पाच भरत अने पाच ऐरावत ए दम क्षेत्रनी तीम चोरीमी तेना मातसेने बीस प्रतिमा थयी पाच महाप्रिदेह क्षेत्रनी पाच चरीसी तेना एकमौने माठ प्रतिमा थर्ड. एक मोने बीस फ़ल्याणक बीम वेरमान चार मास्यता सर्वे मलीने एरू हजारने चोरीस प्रतिमा थर्ड

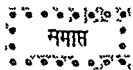
चोरासीलाख जीवाजोनीना प्राण, पर्याप्ती, इन्द्री

चोरासी लाख जीवाजोनीनी इन्द्री दोक्रोड सात लाख पृथ्वीकाय, सातलाखअपकाय, सातलाखतेडकाय सातलाख-वाउकाय, दमलाख प्रत्येरूनस्पतिकाय, चउदालाख साधा-रण वनस्पति, काय, ए वावनलाख एकेन्द्रीनीथई वेइ ड्रीनी चार लाख, तेइ ड्रीनी छे लाख, चौरिंद्रीनी आठलाख, त्रण-विम्लेंद्रीनी अठारा लाख, देवतानी बीस लाख, नारकीनी बीस लाख तिर्यंचपचेंद्रीनीबीसलाख मनुप्यनीसचरलाख सर्वे मिली वे क्रोड इन्द्री थर्ड

चौरासी लाख जीवाजोनीना प्राण ६ क्रोड १० लाख वावनलाख एकेन्द्रीना ४ प्राण तेने चार गुणा करता वे क्रोड आठ लाख प्राण थया वेंद्रीना बारालाख, तेंद्रीना

चउदलास्य प्राण थया, चौरित्रीना सोलालाम्, प्राणथया, ऋण
 रिस्लेद्रीना वनालीम लास्य प्राण थया, देवताना चालीम,
 लाम्बनारिनीना चालीम लास्य, तिर्यचपचेंद्रीना चालीम लास्य
 मनुष्यना ए३ क्रोड चालीम लास्य मरुना भेगा ररता पांच
 क्रोड दस लास्य प्राण थया

३ क्रोड ९८ लाम्ब ॥ चौरासी लाम्ब नीयाजोनीनी
 पर्यासी ॥ वान लाम्ब ए३द्रीनी चार पर्यासी नेने चार
 गुणा कृता ने क्रोड आठलाम्ब पर्यासी थई वेंद्रीने दमलाम्ब
 तेंद्रीने दम लाम्ब चौरित्रीने दम लाम्ब ऋण रिस्लेद्रीन
 तीस लाम्ब, पर्यासी थई देवतानी २४ लाम्ब, नाग्नीनी
 चोरीम लाम्ब, तिर्यच पचेंद्रीनी चोरीम लाम्ब, मनुष्यनी
 चोरीस लाम्ब, पर्यासी मरु भेगीररता ३ क्रोड चौराणु लाम्ब
 पर्यासी थई



८	६०००	१००००	१४०००	१८०००	२००००	७६००	"	१०	१०००	"	"	"	नामक क्र० ७	"
९	७४००	७४००	१३०००	१३०००	१४०००	६०००	११०	२	"	"	"	"	नामक क्र० ६	"
१०	"	७०००	१२०००	१२०००	१४०००	५६००	द्विजट पूर्वा २५	१	"	"	"	"	चक्रशाख क्र० २	"
११	६०००	६६००	११०००	१३०००	१३०००	५०००	सप्त वर्षा २१	८४	"	"	"	"	भारवा क्र० ३	"
१२	६४००	६०००	१००००	१००००	१२०००	४७००	५४	७२	६००	"	"	"	भापाट क्र० १४	"
१३	५४००	५४००	९४०००	९००००	११०००	३६००	१५	६०	"	"	"	"	भापाट क्र० ७	"
१४	५०००	५०००	५००००	६००००	१००००	३२००	७११	३०	७००	"	"	"	चक्रशाख क्र० ५	"
१५	५४००	५४००	७४०००	७००००	९००००	२६००	२११	१०	१०६	"	"	"	चक्र क्र० ५	"
१६	५०००	५३००	६००००	६००००	६००००	२४००	द्विजट वर्षा २५	१	६००	"	"	"	चक्र क्र० ३३	"
१७	०४२४०	३२००	५१०००	५१०००	६७०	२०००	द्विजट वर्षा ६५	"	१०००	"	"	"	चक्रशाख क्र० १	"